मंत्र·तंत्र·यंत्र
कमला यन्त्र
सित०
-६२

दीपावली पर्व

इस वर्ष दीपावली २५-१०-९२ रविवार को है, इसके पूजन मुहूर्त निम्न प्रकार से हैं—

बही-खाता लाने का मुहूर्त (२३-१०-९२)

व्यापार हेतु बही-खाते लाने के लिए निम्न मुहूर्त हैं –

१-	प्रातः	१०-०७	से	१०-३६	तक
२-	प्रातः	११-४२	से	११-५७	तक
३-	दोपहर	०२-१६	से	०३-०५	तक
४-	दोपहर	०४-०६	से	०४-४०	तक

धन-त्रयोदशी कुबेर पूजा मुहूर्त (२३-१०-९२)

१-	प्रातः	०६-३१	से	०९-११	तक
२-	रात	०८-३९	से	११-१६	तक

महालक्ष्मी पूजन (२५-१०-९२)

१-	मन्दिर पूजा	प्रातः	०५-१९	से	०८-१७	तक
२-	कलम दवात पूजा	प्रातः	१०-१०	से	११-०५	तक

लक्ष्मी पूजन (२५-१०-९२)

१-	वृषभ लग्न	शाम	०६-३०	से	०८-२७	तक
२-	सिंह लग्न	रात	१२-५८	से	०३-१२	तक

लक्ष्मी साधना मुहूर्त

पत्रिका में जितने भी साधना प्रयोग विशेषकर लक्ष्मी साधना प्रयोग दिये हैं वे २३-१०-९२ से २८-१०-९२ के बीच कभी भी सम्पन्न किये जा सकते हैं, क्योंकि ये सभी दिन दीपावली दिवस ही कहलाते हैं। यह कोई आवश्यक नहीं कि दीपावली की रात्रि में ही सभी प्रयोग हों, कार्तिक मास तो कमला संवत्सर (लक्ष्मी मास) ही माना गया है।

बही लेखन मुहूर्त

२३-१०-९२—प्रातः ११-०० से ११-४५ तक

अथवा

२५-१०-९२—रात लक्ष्मी पूजन के समय।

वर्ष-१२

अंक-६

सितम्बर-१९९२

* * * * * * * * * * * * *
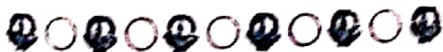
: सम्पर्क :

मन्त्र-तन्त्र-यन्त्र विज्ञान

डॉ० श्रीमाली मार्ग,

हाईकोर्ट कालोनी,

जोधपुर-३४२००१ (राज०)

टेलीफोन : ३२२०६

प्रानो भद्राः कृतयो यन्तु विश्वतः

मानव जीवन की सर्वतोन्मुखी उन्नति प्रगति और भारतीय गूढ़ विद्याओं से समन्वित मासिक

मन्त्र-तन्त्र-यन्त्र विज्ञान

प्रार्थना

॥ ॐ महालक्ष्मी च विद्महे विष्णु पत्न्यीं च
धीमहि तन्नो लक्ष्मी प्रचोदयात् ॥

हे महालक्ष्मी ! इस शुभ अवसर पर आप मेरे घर में स्थायी निवास करें, हे विष्णु पत्नी लक्ष्मी ! आप विद्या, बुद्धि, बल एवं वैभव दें, जिससे हम सम्पन्न, सुखी एवं यशस्वी बन सकें।

समाचार—सूचनाएं

शारदीय नवरात्रि महोत्सव

इस वर्ष शारदीय नवरात्रि महोत्सव पर्व गुरुधाम दिल्ली में आयोजित हो रहा है। यह महा आयोजन २७ सितम्बर सन् १९९२ से ४ अक्टूबर १९९२ तक चलेगा। प्रतिदिन जो कार्यक्रम सम्पन्न होंगे उस सम्बन्ध में सूचना सभी पत्रिका सदस्यों को व्यक्तिगत निमन्त्रण के साथ भेज दी गई है। शिविर स्थल का पता है –

सनातन धर्म सभा, रोड नं०-२७ 'ए'
पूर्वी पंजाबी बाग, नई दिल्ली

इस आयोजन की तैयारियां बड़े जोरों से चल रही हैं। यह आयोजन निश्चय ही अब तक का सबसे भव्य आयोजन होगा। पूज्य गुरुदेव का नित्य ज्ञानवर्धक साधनात्मक प्रवचन, आठ दिन तक विशिष्ट साधनाएं, कुण्डलिनी जागरण दीक्षा एवं कमला तन्त्र साधना निश्चय ही साधकों को भावविभोर करेंगे। याद रखें कि शिष्य को चैत्र नवरात्रि, गुरुदेव जन्म दिवस, गुरु पूर्णिमा एवं आश्विन नवरात्रि, इन चार आयोजनों पर तो अवश्य पहुंच कर गुरु कृपा प्राप्त करनी ही चाहिए। आप सभी समर्पित शिष्य हैं अपने क्षेत्र में ज्यादा से ज्यादा प्रचार कर धर्म प्रेमी बन्धुओं के साथ अवश्य ही पहुंचना है।

दीक्षा संस्कार

दीक्षा साधक का नवीन जन्म दिवस है और दीक्षा प्राप्त कर ही साधक शिष्य के रूप में परिणित हो पाता है। दीक्षा द्वारा गुरु शिष्य को अपने वरद हस्त तले, अपनी छत्र छाया में लेकर उसे अपना बना लेते हैं। दीक्षा द्वारा ही गुरुदेव शिष्य को अपनी शक्ति का अंश प्रदान करते हैं।

इस महीने जिन साधकों ने गुरुधाम दिल्ली तथा गुरु शक्ति पीठ जोधपुर में दीक्षा लेकर शिष्यत्व ग्रहण किया उसकी सूची निम्न है—

श्री शेर सिंह	नई दिल्ली	श्री गौरव चोपड़ा	हरियाणा
श्री प्रह्लाद नारायण कालरा	नई दिल्ली	श्री विजय चोपड़ा	,,
श्रीमती शकुन्तला चोपड़ा	फरीदाबाद	श्री पूनम चोपड़ा	,,
श्री रंजन भाटिया	,,	श्री मोहन चोपड़ा	,,
श्री बालकृष्ण मेहता	किन्नौर (हि.प्र.)	श्रीमती लक्ष्मी यादव	फरीदाबाद

डॉ० घनश्याम गोयल	मुजफ्फरनगर
श्री सजीव कुमार	अम्बाला
श्री देवेन्द्र शर्मा	समालखा (हरि.)
श्रीमती अरविन्द अरोड़ा	अम्बाला
श्री काशी प्रसाद दीक्षित	झांसी
श्री बलराम दीक्षित	छतरपुर
श्री लाल बाहदुर	महाराजगंज
श्री डी. आर. कौशिक	फरीदाबाद
श्रीमती उर्मिला कौशिक	,,
ओम प्रकाश अग्रवाल	दार्जिलिंग
श्रीमती प्रीती अग्रवाल	,,
श्री गणेश प्रसाद	गोरखपुर
श्री अभिषेक कुमार	लुधियाना
श्री राजेन्द्र सिंह	गुड़गांवा
श्री विजय सहगल	फरीदाबाद
सुश्री सुनीता सहगल	,,
श्रीमती कौशल्या सहगल	,,
श्री गोविन्द सिंह	,,
श्री ओम प्रकाश सचदेवा	,,
श्री शोभरन सिंह	फरुक्खाबाद
श्रीमती मिथिलेश कुमारी	,,
श्री दीपक स्वरूप	बस्तर
श्री रेवेन्द्र प्रसाद मिश्र	,,
सुश्री इन्दी कारकोरा	बैंगलोर
श्री अनिल नरूला	चण्डीगढ़
श्री आदित्य अत्री	कांगड़ा
श्रीमती शीला तिवारी	इलाहाबाद
श्री चन्द्रकान्त तिवरी	,,
कुमारी वन्दना तिवारी	,,
श्री शीतल प्रसाद श्रीवास्तव	वाराणसी
श्री लक्ष्मण प्रसाद	,,
श्री कपिलदेव महतो	खगड़िया (बिहार)
श्री सूरजभान	बिजनौर
श्री राजेन्द्र कुमार	हिसार
श्रीमती ज्ञान देवी शर्मा	ब्यावर
कु० सरिता शर्मा	,,
श्री जगदीश शर्मा	अजमेर
श्री जालन्धर	महाराजगंज
श्री जीतेन्द्र प्रसाद वालिया	सहारनपुर
श्री बलदेव मित्र चावला	दिल्ली
श्री अशोक कुमार	,,
श्री वीरेन्द्र नाथ चतुर्वेदी	,,
श्रीमती ओमवती चतुर्वेदी	,,
श्री कृष्ण कुमार गौतम	,,
श्री मुकेश कुमार गौतम	,,
डॉ. खजान सिंह भारद्वाज	,,
श्री अमिताभ भारद्वाज	,,
श्री उदय शंकर पाण्डेय	,,
श्री शिव कुमार तिवारी	,,
श्रीमती कमला नेगी	,,
श्रीमती मंजु नेगी	,,
श्री राकेश कुमार शर्मा	,,
श्रीमती कृष्णवन्ती	,,
श्री सर्वजीत सिंह	,,
श्री नवीन कौशिक	,,
श्री देवी राम	,,
श्री सुरेन्द्र कुमार पाण्डेय	,,
श्री बनवारी गौतम	,,
श्री प्रवीन्द्र गौतम	,,
श्रीमती दर्शन	,,
श्री पवन कुमार शर्मा	,,
श्रीमती ओमवती	,,
श्री नरेन्द्र प्रकाश चितोदिया	वर्धा
श्री चन्द्रपाल शर्मा	दिल्ली
श्रीमती अनिता शर्मा	,,
श्री सुभाष चन्द्र शर्मा	गाजियाबाद
श्री हृदेश प्रताप रावल	दादरी
श्री गनराज शर्मा	पठानकोट
श्री सौरभ जयेश देसाई	बलसाड़
श्री प्रकाश	बैंगलोर
श्रीमती भैरवी	,,
श्री निरंजन सिंह	शाहजहांपुर

सिद्धाश्रम गोल्डन कार्ड योजना

पिछले महीने पत्रिका के अगस्त अंक में प्रकाशित **'सिद्धाश्रम गोल्डन कार्ड योजना'** का साधकों, शिष्यों ने बड़े उत्साह से स्वागत किया, इस सम्बन्ध में पूर्ण जानकारी हेतु पत्रिका कार्यालय को निरन्तर पत्र प्राप्त हो रहे हैं। शिष्यों और साधकों का अनुरोध था कि इस पूरी धनराशि १५०००/- रुपये को किश्तों में स्वीकार करने की अनुमति प्रदान की जाय। इस सम्बन्ध में यह सूचित करते हुए हर्ष है कि इस योजना में अब साधक तीन किश्तों में पूरी धनराशि जमा करा सकते हैं। प्रत्येक किश्त पांच हजार की होगी, तथा तीनों किश्तें प्राप्त होने पर ही उन्हें **'सिद्धाश्रम गोल्डन कार्ड'** भेंट कर इस योजना के अन्तर्गत पूर्ण सदस्य बनाया जायगा।

जिन सदस्यों ने इस योजना के अन्तर्गत अब तक प्रथम किश्त भेजी है उनके नाम इस प्रकार हैं —

श्री एस.के. मिश्रा	बांदा	श्री आर.पी. अग्रवाल	मुजफ्फरनगर
श्री हरीराम चौधरी	फैजाबाद	श्री श्यामल कुमार बनर्जी	फैजाबाद
श्री सुभाष शर्मा	दिल्ली	श्री एन.के. मिश्रा	वाराणसी
श्री महेन्द्र गुप्ता	यमुनानगर	सुश्री सोनल गेलानी	बम्बई
श्रीमती सीमा गोयल	दिल्ली	श्री सुभाष सुहरिया	बांकुड़ा

पाठकों, साधकों की सहभागिता

पत्रिका में नियमित रूप से जो साधनात्मक साहित्य प्रकाशित होता है, उसका अध्ययन कर साधक-शिष्य अपनी रुचि अनुसार साधना सम्पन्न करते हैं, साधना के दौरान साधकों को विभिन्न अनुभूतियां प्राप्त होती हैं यथा गुरु साधना में सद्गुरुदेव के दर्शन होते हैं, स्वप्न में भविष्य सम्बन्धी घटनाओं के विशेष संकेत प्राप्त होते हैं।

सभी पाठकों से निवेदन है कि वे जो भी साधना करें, उसकी अनुभूति के सम्बन्ध में पत्र अवश्य लिखें, साधनात्मक अनुभूतियों की विशेष घटनाओं के सम्बन्ध में भी पत्र अवश्य भेजें, ऐसे विशिष्ट पत्र अन्य पाठकों के लाभार्थ पत्रिका में अवश्य प्रकाशित किये जाएंगे।

ज्ञानकोष हैं पत्रिका के पुराने अंक

आपकी इस पत्रिका का प्रकाशन सन् ८१ से निरन्तर हो रहा है, हर अंक अपने आपमें निराला एवं अद्भुत् है, पत्रिका के पुराने अंकों की मांग कार्यालय को निरन्तर प्राप्त होती है, लेकिन एक-दो अंक भेजने का नियम नहीं है पूरे साल भर का सेट ही भेजा जा सकता है, पुराने अंकों का सेट रियायती मूल्य पर प्राप्त कर अपनी साधना साहित्य लाइब्रेरी को पूर्ण बनावें और गुरुदेव का सुन्दर चित्र उपहार में प्राप्त करें—

सन् ८९ पूरे वर्ष का सेट—५०)रु०, सन् ९० का सेट—६०)रु०, सन् ९१ का सेट—७०)रु०

लक्ष्मी की नौ कलाएं

विभूति, नम्रता, कान्ति, तुष्टि, कीर्ति, सन्नति, पुष्टि, उत्कृष्टि तथा ऋद्धि, लक्ष्मी की ये नौ पीठ, नौ कलाएं हैं, जिस व्यक्ति में इन पीठ शक्तियों का विकास होता है, वहीं लक्ष्मी विराजमान होती है

सांसारिक कर्त्तव्य करते हुए दान रूपी कर्त्तव्य जहां विद्यमान होता है, अर्थात् शिक्षा दान, रोगी सेवा, जल दान इत्यादि कर्त्तव्य लक्ष्मी की **'विभूति'** नामक लक्ष्मी पीठिका है, यह लक्ष्मी निवास की पहली शक्ति है, दूसरी शक्ति **'नम्रता'** है, जितना व्यक्ति नम्र होता है, लक्ष्मी उसे उतना ही ऊंचा उठाती है। जब 'विभूति' व 'नम्रता' दोनों कलाएं आ जाती हैं, तो वह लक्ष्मी की तीसरी कला **'कान्ति'** का पात्र हो जाता है, चेहरे पर एक तेज आता है और इन तीनों कलाओं की प्राप्ति होने पर **'तुष्टि'** नामक चतुर्थ कला का आगमन होता है, वाणी सिद्धि, व्यवहार, गति, नये-नये कार्य पुत्र प्राप्ति, नई दिव्यता सब उसमें एकरस होती हैं। इसके बाद आगमन होता है लक्ष्मी की पांचवीं पीठ अधिष्ठात्री कला **'कीर्ति'** का, कीर्ति की उपासना करने से साधक अपने जीवन में धन्य हो जाता है, संसार के आधार का अधिकारी हो जाता है।

कीर्ति साधना से लक्ष्मी की छटी कला **'सन्नति'** मुग्ध होकर विराजमान होती है, और इसके बाद आगमन होता है **'पुष्टि'** नामक सातवीं कला का, जिससे साधक जीवन में एक संतुष्टि अनुभव करता है। उसे अपने जीवन का सार मालूम पड़ता है, फिर इसकी साधना से उत्पन्न होती है आठवीं कला जिसे **'उत्कृष्टि'** नाम प्राप्त है, जिसके जीवन में जो क्षय दोष होता है, वह समाप्त हो जाता है। केवल वृद्धि ही वृद्धि होती है, और इसके पश्चात् सबसे महत्वपूर्ण सर्वोत्तम **'ऋद्धि'** नामक पीठाधिष्ठात्री अपने आप आ ही जाती है।

इन नौ पीठों, नौ कलाओं से हीन व्यक्ति के पास लक्ष्मी नहीं आ सकती और न ही स्थायी रहती है, लेकिन इन नौ पीठ शक्तियों का आधार है **"दया"** और जहां दया की साधना है वहां सब कुछ है, क्योंकि दया के गर्भ में ही तो महालक्ष्मी और विष्णुपद विराजमान है।

जो आपत्ति झेलने में, कष्ट उठाने में, परिश्रम करने में सहनशील नहीं है, उस पर भगवती लक्ष्मी कभी प्रसन्न नहीं रहती। ●

सर्व बाधा निवारण एवं ज्ञान सिद्धि हेतु

शक्ति दुर्गा प्रयोग

सर्व बाधा निवारण एवं विशेष ज्ञान प्राप्ति हेतु साधक को वन दुर्गा साधना का यह लघु प्रयोग अवश्य ही सम्पन्न करना चाहिए, इससे उसके जीवन में आने वाली बाधाओं का नाश होता है।

यह प्रयोग किसी भी दिन रात ९ बजे के बाद प्रारम्भ करें पूजा स्थान में अपने सामने भगवती दुर्गा का एक बड़ा चित्र अथवा तस्वीर लगावें, तत्पश्चात् चित्र के सामने एक पात्र में 'सर्व बाधा मुक्ति यन्त्र' 'श्रीवन दुर्गा शक्ति फल' स्थापित कर आगे शुद्ध घी का दीपक और अगरबत्ती जलावें, यन्त्र एवं फल की पूजा केवल दूब (दुर्वा), इलायची एवं अष्टगन्ध से करें। प्रसाद रूप में केवल फलों का ही अर्पण करना है।

अब हाथ में जल लेकर संकल्प लें और जिस बाधा की शान्ति चाहते हैं वह बाधा विशेष रूप से दोहराएं।

संकल्प

ॐ ह्लीं सर्वा-बाधा इति मन्त्रस्य किरात ईश्वर ऋषि:, अनुष्टुप् छन्द:. ग्रां ग्रां बीजम्, ई ई शक्ति:, ऊं ऊं कीलकं, महाविद्या वनदुर्गा देवता, मम (अमुक) गोत्रस्य स्वाभीष्ट सिद्धयर्थ जपे विनियोग:।

ध्यान

चार भुजाओं वाली, चन्द्रमा की कलाओं जैसी शोभायमान, उन्नत स्तनों वाली, कुंकुम की लालिमा के समान रक्तवर्ण वाली, कमल के समान आंखों वाली, धनुष, बाण, अंकुश और पाश हाथों में ली हुई, लोकमाता भगवती दुर्गा को मैं नमस्कार करता हूं।

न्यास	कर-न्यास	अंग-न्यास
ॐ ग्रां ह्लीं क्रौं सर्वा बाधा विनिर्मुक्तो क्रौं ह्लीं ग्रां ॐ	अंगुष्ठाभ्यां नम:	हृदयाय नम:
ॐ ग्रां ह्लीं क्रौं धन-धान्य समन्वित: क्रौं ह्लीं ग्रां ॐ	तर्जनीभ्यां नम:	शिरसे स्वाहा
ॐ ग्रां ह्लीं क्रौं मनुष्यो क्रौं ह्लीं ग्रां ॐ	मध्यमाभ्यां नम:	शिखायै वषट्
ॐ ग्रां ह्लीं क्रौं मत्प्रसादेन क्रौं ह्लीं ग्रां ॐ	अनामिकाभ्यां नम:	कवचाय हुं
ॐ ग्रां ह्लीं क्रौं भविष्यति क्रौं ह्लीं ग्रां ॐ	कनिष्ठिकाभ्यां नम:	नेत्र-त्रयाय वौषट्
ॐ ग्रां ह्लीं क्रौं न संशय: क्रौं ह्लीं ग्रां ॐ	करतल-करपृष्ठाभ्याम नम:	अस्त्राय फट्

मन्त्र

ॐ ग्रां ह्लीं क्रौं सर्वा-बाधा विनिर्मुक्तो धन-धान्य समन्वित:
मनुष्यो मत्प्रसादेन भविष्यति न संशय: क्रौं ह्लीं ग्रां ॐ ।।

शास्त्रोक्त विधानुसार पूर्ण सिद्धि हेतु सवालाख मन्त्र जप का विधान है, तथा मन्त्र अनुष्ठान पूरा होने पर इसका दशांश हवन करना चाहिए, हवन-तिल, घी तथा छोटी इलायची से करें हवन की आहुति निम्न मंत्र से करें—

।। ॐ वनदुर्गा तर्पयामि नम: ।।

किसी भी प्रकार की बाधा हो इस अनुष्ठान से शान्त अवश्य हो ही जाती है, इसमें कोई सन्देह नहीं। ●

आप में से प्रत्येक शिष्य और साधक को

यह प्रपत्र तो

भर कर भेजना ही है

प्रिय पाठकों, शिष्यों और साधकों !

आप सबका और हमारा एक ही लक्ष्य है, कि "सिद्धाश्रम साधक परिवार" का विस्तार हो, और यह तभी हो सकता है, जब हमारी यह पत्रिका "मन्त्र-तन्त्र-यन्त्र विज्ञान" अधिक से अधिक पाठकों के हाथों में पहुंचे।

इसके लिए हमने निर्णय लिया है कि जनवरी ९३ से पत्रिका, बुक स्टालों, पत्रिका-विक्रेताओं को, इससे सम्बन्धित दुकानदारों की भागीदारी भी इसमें की जाय, जिसकी वजह से ज्यादा से ज्यादा लोग इसका लाभ उठा सकें।

जनवरी ९३ से

★ हम इस पत्रिका का पूरा का पूरा कलेवर बदल रहे हैं।
★ पूरी का पूरी पत्रिका आॅफसेट पर छाप रहे हैं।
★ पूरी पत्रिका में रंगीन चित्र एवं महत्वपूर्ण सामग्री दे रहे हैं।
★ पृष्ठों की संख्या ६४ और इससे भी ज्यादा कर रहे हैं।
★ कवर पृष्ठ चार रंगों का सुन्दर व आकर्षक आॅफसेट से प्रकाशित कर रहें हैं।
★ प्रत्येक माह की पत्रिका एक महीने पूर्व ही स्टाल पर भेज देने की व्यवस्था कर रहे हैं।

आप क्या करें

● आप अपने शहर या कस्बे के उन पत्रिका स्टालों के नाम व पूरे पते आगे दिये हुए प्रपत्र में लिख कर हमें भेज दें।
● आप स्टाल विक्रेता से रू-ब-रू मिलिये व पत्रिका के बारे में बात कीजिए।
● यह ध्यान रखिये, कि उनका पता एकदम से सही और स्पष्ट हो।
● एक से ज्यादा पत्रिका विक्रेता आपके शहर या कस्बे में हों तो अलग से एक कागज पर उनके भी पते लिख भेजें।
● यह ध्यान रखिये कि हम सर्वोत्तम हैं, अतः आप अपने शहर या कस्बे के श्रेष्ठतम, सर्वोत्तम बुक स्टाल का ही पता लिख भेजिये।

● आप उनसे जानकारी प्राप्त कीजिये कि—

* वे प्रत्येक महीने कितनी पत्रिका बेच सकते हैं ?
* वे क्या कमीशन चाहते हैं ?
* उनके नियम एवं शर्तें क्या हैं ?

और हमें यह सब विवरण प्रपत्र में लिखकर लौटती डाक से ही भेज दीजिये।

● हम पत्रिका विक्रेताओं को पेम्पलेट, पत्रिका का नमूना व सम्बन्धित साहित्य सुरक्षित रूप से भेज देंगे, जिससे वे आर्डर देने का निर्णय ले सकें।

★ **और आपको परिश्रम के बदले में पूज्य गुरुदेव के आशीर्वाद युक्त उनका सुन्दरतम फोटो सुरक्षित रूप से भिजवाने की व्यवस्था कर रहे हैं।**

★ **प्रपत्र फाड़ कर अलग कर दें, इसे सावधानी से साफ-साफ अक्षरों में** (हिन्दी या अंग्रेजी में) **भर कर लिफाफे में डाल कर उस पर साठ पैसे का टिकट लगा दें और उस पर पता लिखें—**
मन्त्र-तन्त्र-यन्त्र विज्ञान, डॉ० श्रीमाली मार्ग, हाईकोर्ट कॉलोनी, जोधपुर-३४२००१ (राजस्थान)

---------------------------------------यहां से काटिये---------------------------------------

मेरे शहर, कस्बे या गांव में निम्न बुक स्टाल सबसे श्रेष्ठ ईमानदार है, मैंने उनसे पत्रिका के बारे में बात की है—

● स्टाल अथवा दुकान का नाम..

● पूरा पता..

....

● स्टाल अथवा दुकान के मालिक या विक्रेता का नाम..

● उससे पत्रिका के बारे में जो बातचीत हुई उसका संक्षिप्त विवरण अलग पन्ने पर या यहीं पर लिखें— ....

● स्टाल अथवा दुकान का कोई टेलीफोन नं० हो तो लिखें— ....

● कितनी प्रतियां एक महीने में विक्रय करेगा......................

● क्या कमीशन चाहता है..............................

आपके हस्ताक्षर
आपका पूरा पता

....

....

विजया दशमी

विजय सिद्धि पर्व

रात्रिकालीन तांत्रोक्त तीव्र विजय प्रयोग

पौराणिक कथा के अनुसार भगवान श्रीराम ने इस दिन रावण का विनाश किया था, जो कि पाप पर पुण्य की विजय का प्रतीक था। वास्तविक रूप में तो भगवान राम ने अपने कार्यों में पूर्णता देने हेतु और शक्तियों को तीव्र रूप से जाग्रत करने के लिए नवरात्रि अनुष्ठान सम्पन्न किया था और विजया दशमी इस अनुष्ठान की पूर्णता का सुखद मुहूर्त बना।

यह दिवस विजय दिवस है, और युद्ध क्षेत्र में वानरों की सेना को लेकर शक्तिशाली रावण से युद्ध कर रहे थे, लेकिन युद्ध का पार नहीं पड़ रहा था तब नारद ने कहा-"हे राघव! रावण के विनाश का उपाय बताता हूं, इसके लिए आप श्रद्धा पूर्वक आश्विन मास में नवरात्रि व्रत करिये, हे राम! नवरात्रि में उपवास, भगवती का पूजन तथा विधिवत् जप-हवन करने से सभी कामनाएं पूरी होती हैं, देवी को पवित्र वस्तुएं अर्पण कर जप का दशांश हवन करके आप शक्ति सम्पन्न हो जाएंगे। सबसे पहले भगवान् विष्णु ने यह व्रत किया था, फिर शंकर जी ने और ब्रह्मा जी ने किया। उनके बाद इन्द्र ने इस व्रत का पालन किया महर्षि विश्वामित्र ने यह व्रत किया था। भृगु वशिष्ठ तथा कश्यप भी इसे कर चुके हैं। जब देव गुरु बृहस्पति की भार्या को चन्द्रमा ने हर लिया था, तब उन्होंने भी नवरात्रि व्रत किया था। अतः हे राजेन्द्र! रावण का वध करने के लिए आप भी यह व्रत करिये। वृत्रासुर का वध करने के लिए इन्द्र ने और त्रिपुरासुर के नाशार्थ भगवान् शंकर ने इस उत्तम व्रत को किया था। मधु दैत्य के वध के लिए भगवान् विष्णु ने सुमेरु पर्वत के शिखर पर इस व्रत का पालन किया था। अतएव हे महामते! आप भी पूर्ण तत्परता के साथ यही व्रत कीजिये और आप की इस सफलता के कारण विजया दशमी पर्व महा सिद्धि पर्व, विजय पर्व के रूप में विख्यात होगा।"

इस प्रकार विजया दशमी के दिन शक्ति की विशेष आराधना और विशेष प्रकार के प्रयोग अवश्य ही सम्पन्न करने चाहिए। अब तक का यह अनुभव रहा है कि जब भी सिद्ध मुहूर्त में कोई कार्य सम्पन्न किया जाता है तो उसका फल अवश्य ही प्राप्त होता है।

विजया दशमी के दिन शक्ति प्रतीकों की अर्थात् अस्त्र-शस्त्रों की पूजा की जाती है। आजकल यह प्रचलन अवश्य ही कम हो गया है, लेकिन जिसके घर में यदि किसी प्रकार का अस्त्र-शस्त्र हो तो उसकी पूजा अवश्य करें। व्यापारिक बन्धु इस दिन अपने प्रधान अस्त्र–कलम दवात का पूजन करें बालक अपनी पुस्तकों का पूजन करें, स्त्रियां अपने विशेष स्वर्ण आभूषणों की पूजा करें। पूजा चाहे सूक्ष्म रूप से करें अथवा वृहद रूप में, लेकिन विजया दशमी जैसे शुभ मुहूर्त के दिन शक्ति साधना अवश्य ही करनी चाहिए।

विजया दशमी मुहूर्त

इस बार ग्रहों की गति के अनुसार विजया दशमी का मुहूर्त विशिष्ट रूप से आया है, जैसा कि आपको विदित है कि चार अक्टूबर को दुर्गाष्टमी है, तथा पांच अक्टूबर को दुर्गा नवमी का योग है, लेकिन विजया दशमी इस नवमी के दिन ही रात्रि १२.१४ बजे से छः अक्टूबर को प्रातः ६.४८ बजे तक विजया दशमी का 'विजय काल' 'सिद्धि पर्व' है, और इस दिन ही यह साधना सम्पन्न करनी चाहिए, क्योंकि आगे भद्रा योग आ गया है, तथा पंचक भी प्रारम्भ हो रहा है, जो कि शास्त्रोक्त सिद्ध मुहूर्त नहीं है। साधकगण उपरोक्त बात का विशेष ध्यान रखें।

विजय शक्ति की दो साधनाएं

१-उच्छिष्ट चाण्डालिनी प्रयोग

उच्छिष्ट चाण्डालिनी, देवी का तीव्रतम स्वरूप है, जिसमें देवी अपने शत्रुओं का नाश तीव्र गति से करते हुए उन्हें शत्रु से शत्र बना देती है। जीवन में रोग, दुःख, पीड़ा, बन्धन, दुर्भाग्य शत्रु ही तो हैं, और जब तक इन शत्रुओं को पूर्णतः मार ही नहीं दिया जाता, तब तक जीवन के पाप नष्ट नहीं होते, और जीवन में सुख, मुक्ति, सौभाग्य तथा पराक्रम की प्राप्ति नहीं होती। यह अभीष्ट सिद्धि की साधना है। इसमें तीन प्रकार के मन्त्र हैं—

१-सर्व पाप दोष नाश हेतु—

ऐं ह्रीं क्लीं सौः ऐं ज्येष्ठ मातंगी नमामि उच्छिष्ट चाण्डालिनी त्रैलोक्यं वशंकरी स्वाहा हुं।

२-शत्रु नाश हेतु—

उच्छिष्ट चाण्डालिनी सुमुखी देवी महापिशचिनी ह्रीं ठः ठः ठः ।।

३-सर्व सिद्धि हेतु—

उच्छिष्ट चाण्डालिबी मातंगी सर्व वशंकरी नमः स्वाहा ।।

साधना रहस्य

यह साधना तात्कालिक सफलता की, विजय की महाविद्या साधना है। इसमें विशेष प्रकार की सामग्री का प्रयोग होता है। साधक लाल वस्त्र धारण करें, तथा रात्रि में विजया दशमी का मुहूर्त सिद्ध समय प्रारम्भ होने पर यह साधना प्रारम्भ कर दें। इस साधना में मुख्य रूप से तीन वस्तुओं की आवश्यकता रहती है—

१-आठ उच्छिष्ट चाण्डालिनी चक्र।
२-तन्त्र विजय यन्त्र।
३-तांत्रोक्त बिल्ली की नाल।

इसके अतिरिक्त आठ लोहे कीलें, तिल, तेल का दीपक, सिन्दूर तथा नैवेद्य के रूप में लड्डू के अतिरिक्त सायंकाल किये गये भोजन का अंश भोग के रूप में रखें। इस साधना में साधक को कैंची अपने पास अवश्य रखनी

चाहिए ।

दक्षिण दिशा की ओर मुंह कर साधक अपने सामने एक बाजोट पर लोहे की थाली में त्रिकोण सिन्दूर से बनावें, सिन्दूर से स्वयं के तिलक करें। तत्पश्चात् अपने सामने उस थाली में त्रिकोण के मध्य में **तन्त्र विजय यन्त्र** स्थापित कर बाजोट पर आठ दिशाओं में उच्छिष्ट चाण्डालिनी की आठ शक्तियों का ध्यान करते हुए प्रत्येक उच्छिष्ट चाण्डालिनी चक्र को कैंची से स्पर्श कराकर आठ दिशाओं में स्थापित कर दें। **तांत्रोक्त बिल्ली नाल** को सिन्दूर से लेपन कर उसके साथ एक सुपारी रख कर लाल कपड़े में बांध कर अपनी बाईं दिशा में रख दें। साधना प्रारम्भ करने से पहले ही साधक तेल का दीपक तथा धूप अवश्य जला दें, जब तक अनुष्ठान चल रहा हो कमरे के भीतर कोई प्रवेश न करे।

अब अपने हाथ में जल लेकर संकल्प करें कि मैं अमुक कार्य हेतु अथवा अमुक कार्य में विजय प्राप्त करने हेतु, अमुक मुकदमे में सफलता प्राप्त करने हेतु अथवा अमुक बाधा हटाने हेतु। (जिस प्रकार का भी कार्य हो), उसका संकल्प लेते हुए उच्छिष्ट चाण्डालिनी देवी को साक्षी रखते हुए यह जल भूमि पर छोड़ दें। अब आठ लोहे की कलें, आठ चाण्डालिनी चक्र को ऊपर रख दें तथा वीर मुद्रा में बैठ कर उच्छिष्ट चाण्डालिनी का ध्यान करें।

ध्यान मन्त्र

शवोपरि समासीनां रक्ताम्बर-परिच्छदाम् ।
रक्तालंकार-संयुक्तां गुंजा-हार-विभूषिताम् ॥
षोडशाब्दां च युवतीं पीनोन्नत-पयोधरम् ।
कपाल-कर्तृका-हस्तां परां ज्योतिः स्वरूपिणीम् ॥

शवासन पर स्थित रक्त वर्ण के वस्त्र पहिने तथा रक्त वर्ण आभूषणों से विभूषित देवी उच्छिष्ट चाण्डालिनी षोडश वर्षीय, ज्योति अलंकृत गुंजाहार से सुशोभित बाएं हाथ में नर कपाल तथा दाहिने हाथ में कंची लिये हुए, पूर्ण ज्योति स्वरूपा एवं अपने साधक पर पूर्ण कृपा कर विजय प्रदात्री देवी को इस साधक का प्रणाम।

अब साधक नैवेद्य का अर्पण कर दोनों हाथ जोड़ कर शान्त मुद्रा में बैठें, तत्पश्चात् अपने कार्य के अनुसार पीछे दिये गये मन्त्र का उच्चारण प्रारम्भ करें। इस सिद्ध विद्या हेतु एक हजार आठ बार मन्त्र का जप आवश्यक है, मन्त्र जप करते समय वीर मुद्रा में बैठें और कैंची अपने आसन के नीचे रखें।

मन्त्र जप अनुष्ठान पूर्ण होते ही अपने स्थान से उठ कर सामने जो सामग्रियां रखी हैं उनमें उच्छिष्ट चाण्डालिनी चक्र लोहे की कीलों सहित तांत्रोक्त बिल्ली नाल को घर के बाहर कहीं पर भी गड्ढा खोद कर गाड़ दें और उस पर एक भारी पत्थर रख दें तथा पीछे मुड़ कर न देखें।

घर आकर स्नान कर अपने पूजा स्थान में जाकर तन्त्र विजय यन्त्र को धूप दीप देकर काले डोरे से गले या बांह में धारण कर लें।

यह विजय प्रयोग प्रबल प्रयोग है, इससे भयंकर से भयंकर बाधा शान्त हो जाती है।

ध्यान रखें कि अपनी तांत्रोक्त साधना की चर्चा किसी से भी न करें।

२-विजया दशमी दुर्गा दीप दान तीव्र प्रयोग

नवरात्रि साधना के पश्चात् अष्टमी के दिन पूर्णाहुति अवश्य सम्पन्न की जाती है, लेकिन वास्तव में प्रत्येक साधक को नवरात्रि साधना में पूर्ण सिद्धि हेतु विजया दशमी के दिन विजय प्राप्ति का दुर्गा दीप दान प्रयोग अवश्य ही करना चाहिए। इस प्रयोग के अन्तर्गत दुर्गा की सभी शक्तियों का इनके देवताओं का आह्वान कर उन्हें दीप दान कर साधना में पूर्ण सफलता की प्रार्थना कर पूर्ण विजय का मार्ग प्रशस्त किया जाता है।

जो साधक नवरात्रि में चाहे लघु अनुष्ठान करे अथवा आठ दिन निरन्तर, उसे विजया दशमी का यह अनुष्ठान अवश्य ही सम्पन्न करना चाहिए।

इस साधना में मुख्य रूप से "महादुर्गा सिद्ध महायन्त्र" "गुरु चरण पादुका" "५१ हकीक पत्थर" "५१ शक्तिचक्र" ५१ सुपारी तथा ५१ दीपक आवश्यक है।

इसके अतिरिक्त पुष्प, चन्दन, फल, अक्षत, सुपारी, वस्त्र तथा दक्षिणा आवश्यक है। दक्षिणा हेतु एक-एक रुपये के सिक्कों की व्यवस्था कर लें।

विजया दशमी के दिन रात्रि में मुहूर्त अनुसार अपने सामने एक तांबे के बर्तन में यन्त्र स्थापित कर उसकी पूजा करें। पूजा सामान्य रूप से उपरोक्त सामग्री से पुष्प, चन्दन इत्यादि से करनी है। अब हाथ में जल लेकर संकल्प कर जल को भूमि पर छोड़ दें। उसके आगे पुष्प का आसन देकर गुरु चरण पादुकाएं स्थापित करें और उनका पूजन कर प्रसाद अर्पित करें तथा ध्यान कर एक माला गुरु मन्त्र का जप करें।

गुरु मन्त्र

॥ ॐ परम तत्वाय नारायणाय गुरुभ्यो नमः ॥

अब साधना का विशेष दीप दान प्रयोग प्रारम्भ होता है, इस हेतु आवश्यक दीपकों को तेल से भर कर पहले से ही जला कर रख लेना चाहिए। इसका पूजन निम्न क्रम से करते हुए मन्त्र बोलें तथा एक सुपारी, एक हकीक पत्थर तथा एक शक्ति चक्र रखें।

प्रथम क्रम

ॐ ह्रीं ग्लां ग्लीं ग्लूं गणपतये नमः।
ॐ ह्रीं क्षां क्षीं क्षूं क्षं क्षपालाय नमः।
ॐ ह्रीं तीक्ष्ण शृंगाय महिषाय नमः।
ॐ ह्रीं वनस्पति-पुत्राय सिंहाय नमः।
ॐ ह्रीं गुरु-मण्डल-पादुकाभ्यो नमः।
ॐ ह्रीं विष्णुलक्ष्मीभ्यां नमः।
ॐ ह्रीं रुद्र गौरीभ्यां नमः।
ॐ ह्रीं ब्रह्मा वागीश्वरीभ्यां नमः।

द्वितीय क्रम

ॐ ह्रीं नन्दायै नमः।
ॐ ह्रीं रक्त दन्तिकायै नमः।
ॐ ह्रीं शाकम्भर्यै नमः।
ॐ ह्रीं भीमायै नमः।
ॐ ह्रीं भ्रमर्यै नमः।
ॐ ह्रीं शिव दूत्यै नमः।

तृतीय क्रम

ॐ ह्रीं ब्रह्माण्यै नमः।
ॐ ह्रीं माहेश्वर्यै नमः।
ॐ ह्रीं कौमार्यै नमः।
ॐ ह्रीं वैष्णव्यै नमः।
ॐ ह्रीं वाराह्यै नमः।
ॐ ह्रीं नरसिंह्यै नमः।
ॐ ह्रीं ऐन्द्राण्यै नमः।
ॐ ह्रीं चामुण्डायै नमः।

चतुर्थ क्रम

ॐ ह्रीं असितांग भैरवाय नमः।
ॐ ह्रीं रुरु-भैरवाय नमः।
ॐ ह्रीं चण्ड भैरवाय नमः।
ॐ ह्री क्रोध भैरवायं नमः।
ॐ ह्रीं उन्मत्त भैरवाय नमः।
ॐ ह्रीं कपाली भैरवाय नमः।
ॐ ह्रीं भीषण भैरवाय नमः।
ॐ ह्रीं संहार भैरवाय नमः।

(**शेष भाग पृष्ठ संख्या ४० पर देखें**)

त्रिकाल संध्या विधान

गायत्री साधना

वर्तमान युग में नियम पूर्वक संध्या की जानकारी बहुत कम लोगों को रह गई है, जब नित्य प्रति पूजा करनी है तो क्यों नहीं विधि पूर्वक ही की जाय, संध्या गायत्री उपासना शक्ति उपासना का श्रेष्ठतम रूप है, जिस घर में नित्य प्रति गायत्री साधना संध्या विधि से सम्पन्न होता है वहां आदि शक्ति अपनी समस्त शक्तियों सहित उस घर को आलोकित करती है।

संध्या का तात्पर्य समीपता से है, सर्दी-गर्मी की ऋतुओं के मिलन की तरह, दिन और रात के मिलन को संध्याकाल कहा जाता है, यह समय पूजा उपासना और आत्म साधन के लिए बहुत ही उपयोगी माना गया है, इस समय का किया गया थोड़ा श्रम भी अधिक लाभ-दायक होता है, इस तरह दिन और रात्रि के संधिकाल में पाप निवृत्ति और ब्रह्मवर्चस्व के लिए जो कर्मकांडात्मक द्विजों के लिए अत्यन्त आवश्यक नित्य कर्म माना गया है, उसे शास्त्रों का इतना उच्च मूल्यांकन प्राप्त है, कि इसकी अवहेलना उचित नहीं है।

संध्या की व्युत्पत्ति इस प्रकार है—सम-ध्यै-जन आप, "ध्यै" धातु का अर्थ होता है-ध्यान करना, अतः संध्या का अभिप्राय हुआ-तन, मन और वाणी से अपने आराध्य के समीप बैठना, उनसे एक रूपता प्राप्त करना, त्रिपदा की तीन रूपों में त्रिकाल संध्या का विधान है, प्रातःकाल की ब्रह्मी, मध्याह्न की वैष्णवी और सायंकाल की शांभवी कही जाती है, इनमें जो निर्देश प्रेरणाएं एक समता भरी पड़ी हैं, उन्हें आस्तिकता, आध्यात्मिकता एवं धार्मिकता कहा गया है।

संध्या का समय शास्त्र मर्यादित है, शास्त्रों में इसके नियमों पर भी प्रकाश डाला गया है।

उत्तम तारकोपेता मध्यमा लुप्तारका।
कनिष्ठा सूर्य सहिता प्रातः संध्या त्रिधा स्मृता॥

—देवी भागवत

प्रातःकालीन संध्या तारों के रहते हुए की जाती है, यदि ब्रह्म मुहूर्त में ही इसे सम्पन्न कर लिया जाय तो उत्तम माना गया है, तारे लुप्त होने पर उसे मध्यम और सूर्योदय होने पर कनिष्ठ होता है।

सायंकालीन संध्या के लिए—

उत्तमा सूर्य सहिता मध्यमा लुप्त सूर्यका।
कनिष्ठा तारकोपेता सायं संध्या त्रिधास्मृता।।

—देवी भागवत

सायंकाल की संध्या सूर्यास्त के तीन घड़ी पहले की की जाती है, तब उसे श्रेष्ठ माना जाता है, तारों के निकलने से पहले मध्यम और तारों के दिखाई देने पर कनिष्ठ मानी जाती है।

विधि

साधक का कर्त्तव्य है, कि प्रातःकाल ब्रह्म मुहूर्त में उठकर शौच, स्नान आदि से निवृत्त होकर शुद्ध वस्त्र धारण करें, पवित्र मन से एकान्त स्थान अथवा अपने पूजा कक्ष में संध्या के लिए उपयुक्त आसन पर बैठें, तीन काल की संध्या में पूर्व, ईशान और उत्तर दिशा की ओर मुख करके बैठना चाहिए, गायत्री साधना और सूर्योपस्थान के लिए प्रातःकाल पूर्व और सायंकाल पश्चिम दिशा की ओर मुख करना चाहिए, संध्या के लिए साधकों के पास यज्ञोपवीत होना आवश्यक है।

पवित्रीकरण

पवित्रीकरण के लिए अपने बाएं हाथ की हथेली में जल लें और दाहिने हाथ से ढक कर निम्न मन्त्र बोलें, मन्त्र पूरा हो जाने पर उस जल को दाहिने हाथ की उंगलियों से अपने शरीर पर छिड़क दें—

ॐ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थांगतोऽपि वा।
यः स्मरेत्पुण्डरीकाक्षं स वाह्याभ्यन्तरः शुचिः।।

तत्पश्चात् अपने हाथ में तीन बार जल ले कर आचमन क्रिया सम्पन्न करें, मस्तिष्क में स्थिर चिद्-रूपिणी महामाया दिव्य तेज शक्ति का ध्यान करते हुए अपने सिर पर अपना दाहिना हाथ रखें।

निम्न मन्त्र का उच्चारण करते हुए प्राणायाम करते समय बाएं हाथ की हथेली पर दाहिने हाथ की कोहनी रखें और उंगलियां बन्द करके केवल अंगूठे से नाक का दाहिना स्वर बन्द कर लें, और बाएं से श्वास खींचते समय तेजस्वी प्राण का ध्यान करना चाहिए, कुछ देर श्वास अन्दर रोके रखें, तत्पश्चात् कनिष्ठिका एवं मध्यमा उंगलियों से नाक का बायां छिद्र बन्द करके दाहिने से श्वास छोड़ देना चाहिए, श्वास बहुत ही शनैः शनैः छोड़ते समय भी निम्न मन्त्र को मन ही मन जपते रहना चाहिए—

ॐ भूः ॐ भुवः ॐ स्वः ॐ महः ॐ जनः ॐ तपः ॐ सत्यम् तत्सवितुर्वरेण्यम् भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्। ॐ आपोज्योतिरसोऽमृतं ब्रह्म भूर्भुवः स्वरोम्।

न्यास

बाएं हाथ में जल लेकर दाहिने हाथ की समूह बद्ध पांचों उंगलियों से निम्न मन्त्रों के साथ शरीर के विभिन्न अंगों को स्पर्श करते समय ऐसी भावना रखनी चाहिए, कि वे सभी अंग शक्तिशाली, पवित्र और महा तेजस्वी बन रहे हैं—

ॐ वाङ् मे आस्येऽस्तु (मुख को पहले दाहिने फिर बाएं)
ॐ नसोऽर्मे प्राणोऽस्तु (नासिका के दोनों छिद्रों को)
ॐ अक्ष्णोर्मे चक्षुरस्तु (दोनो नेत्रों को)
ॐ कर्णयोर्मे श्रोत्रमस्तु (दोनों कानों को)
ॐ बाह्वोर्मे बलमस्तु (दोनों बाहों को)
ॐ ऊर्वोर्मे ओजोऽस्तु (दोनों जंघाओं को)
ॐ अरिष्टानि मेऽगांनि तनूस्तन्वा मे सह सन्तु।।
(शरीर के सभी अंगों पर जल छिड़कें)

अब पृथ्वी माता का ध्यान करें, सामने जल, अक्षत, पुष्प आदि चढ़ाएं तथा धूप-दीप अर्पित करें एवं हाथ

जोड़ कर वेद माता गायत्री का आह्वान करें तथा गायत्री प्रतिमा अथवा यन्त्र पर अक्षत चढ़ाएं, अब आसन पूजा, स्नान और फिर "गायत्री यन्त्र-चित्र' तथा प्रतिमा पर चन्दन, अक्षत, पुष्प, धूप-दीप अर्पित करें और मां गायत्री के आगे एक पात्र में आचमन हेतु जल रखें।
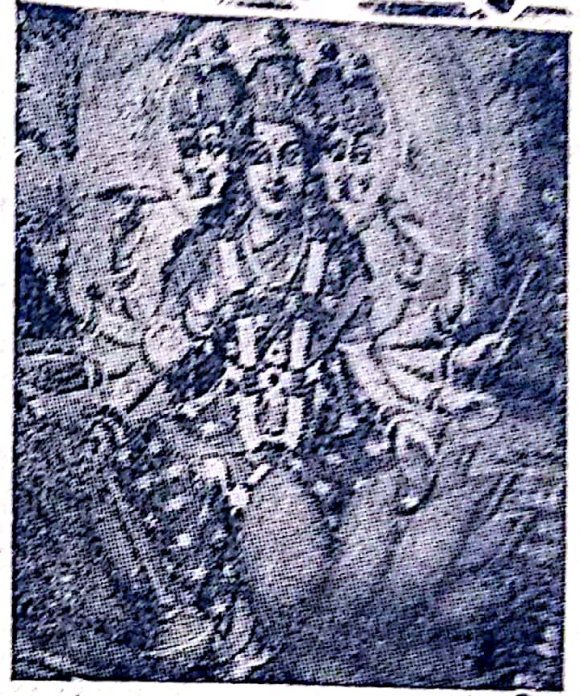
अब गुरुदेव का ध्यान करते हुए निम्न मन्त्र बोलना चाहिए —

गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णु गुरुर्देवो महेश्वरः।
गुरुः साक्षात् परब्रह्म तस्मै श्रीगुरवे नमः॥
अखण्डमण्डलाकारं व्याप्तं येन चराचरम्।
तत्पदं दर्शितं येन तस्मै श्रीगुरवे नमः॥
ध्यान मूलं गुरोर्मूर्तिः पूजा मूलं गुरोः पदम्।
मन्त्र मूलं गुरोर्वाक्यं मोक्ष मूलं गुरोः कृपा॥

इसके बाद एक माला गुरु मन्त्र की जप करनी चाहिए—

गुरु मन्त्र

॥ ॐ परमतत्वाय नारायणाय गुरुभ्यो नमः॥

फिर चेतना मत्र की एक माला जप करें—

चेतना मन्त्र

॥ ॐ ह्रीं मम प्राण देह रोम प्रतिरोम
चैतन्यं जाग्रय ह्रीं ॐ नमः॥

इसके बाद गायत्री मन्त्र की दो माला जप करना अनिवार्य है, एक माला आत्म कल्याण के लिए और दूसरी माला विश्व कल्याण के लिए।

प्रातःकाल ब्रह्म रूप गायत्री का ध्यान करें—

ॐ बालांविद्यान्तु गायत्री लोहितां चतुराननाम्।
रक्ताम्बरद्वयोपेतामक्षसूत्रकरीं तथा॥
कमण्डलुधरां देवीं हंसवाहन संस्थिताम्॥

ब्रह्माणीं ब्रह्मदैवत्याम् ब्रह्मलोकनिवासिनीम्।
मन्त्रेणावाहयेद्देवीमायान्तीं सूर्यमण्डलात्॥

ब्रह्मलोक में निवास करने वाली, कन्या की तरह रूप, शील तथा गुण से सम्पन्न, हंसारूढ़, लाल वर्ण, चार मुख और चार हस्त वाली, रक्तवसना, हाथों में कमण्डल, पुस्तक, दंड और रुद्राक्ष की माला लिए हुए आदित्य मंडल से आने वाली गायत्री देवी का मैं ध्यान करता हूं।

गायत्री मन्त्र

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गोदेवस्य धीमहि।
धियो यो नः प्रचोदयात्। शिवो रजसे शिवातुम्॥

मध्याह्न काल में विष्णु रूप गायत्री का ध्यान करें—

ॐ मध्याह्ने विष्णुरूपां च तार्क्ष्यस्थां पीतवाससम्।
युवतीं च यजुर्वेदां सूर्य मण्डल संस्थिताम्॥

विष्णुरूपा हाथों में शंख, चक्र, गदा और पद्म लिए गरुड़ पर स्थित पीतवसना युवती के रूप में यजुर्वेद से युक्त सूर्य मण्डल में स्थित गायत्री देवी का मैं ध्यान करता हूं।

सायंकाल में शिव रूप गायत्री का ध्यान—

ॐ सायाह्ने विश्वरूपांच वृद्धां वृषभवाहिनीम् ।
सूर्यमण्डलमध्यस्थां सामवेदसमायुताम् ।।

शिव रूप, हाथों में त्रिशूल, डमरू, पाश और पात्र धारण किये हुए वृषम रूढ़ा सूर्य मण्डल में स्थित, सामवेद से युक्त गायत्री देवी का मैं ध्यान करता हूं ।

ध्यान विधि

पालथी मार कर पद्मासन, सिद्धासन अथवा सुखासन लगा कर बैठें, मेरुदण्ड सीधा रखें, आंखें अर्द्ध निमीलित, ध्यान नाशाग्र पर, भावना यह कि सारी सृष्टि में प्रलय की स्थिति हो गई है, ऊपर विस्तृत नील गगन है और नीचे जलप्लावन । जल के सिवा और कुछ भी नजर नहीं आता है, सिर्फ जल के ऊपर कमल पत्र पर एक नवजात शिशु लेटा अपने पैर के अंगूठे को मुख में डाले सुधारस का पान कर रहा है, यह कमल पत्र जल के ऊपर तैरता जा रहा है इस कल्पना चित्र को भावना लोक में भली-भांति स्थिर करने पर बहुत दूर तक एक ज्योति पिण्ड देखना चाहिए, सूर्य की तरह प्रकाशित होने वाले नक्षत्र के रूप में गायत्री का श्रेष्ठ ध्यान है, ध्यान के साथ यह भावना रखनी चाहिए कि जिस तरह सूर्य की किरणों में गर्मी, गतिशीलता और तेजस्विता होती है, इसी तरह गायत्री के ज्योतिपिण्ड में से सद्बुद्धि, सात्विकता और सशक्तता की किरणें निःसृत हो रही हैं और मैं इन शक्तियों का एक पुंज बनता जा रहा हूं ।

कल्पना नेत्रों से यह अनुभव करना चाहिए कि मैं निरन्तर विराट पुरुष को अपने चारों ओर देख रहा हूं, मुझमें तेजस्विता, श्रेष्ठता और दिव्यता बढ़ती जा रही है, उसके संरक्षण में गन्तव्य की ओर मैं बढ़ता चला जा रहा हूं आसुरी प्रवृत्तियां मेरे पास आने का साहस नहीं कर पा रही हैं, मैं प्रसन्नचित्त हूं, मेरा रोम-रोम प्रसन्नता और सन्तोष से खिल रहा है, दुःख और चिन्ता की रेखाएं मेरे मस्तक पर नहीं हैं, मैं हर प्रकार से सुखी हूं, क्योंकि मेरी बुद्धि में सात्विकता, तेजस्विता दिव्यता और सशक्तता है ।

उपर्युक्त संकल्प का मनन धीरे-धीरे करते रहना चाहिए, ताकि इन विचारों की स्थायी छाप मन पर पड़ती रहे ।

विसर्जन

हाथ में अक्षत लेकर निम्न मन्त्र का उच्चारण करते हुए देवी की प्रतिमा पर छिड़क दें ।

ॐ उत्तमे शिखरे जाता भूम्यां पर्वतमूर्धनि ।
ब्राह्मणेभ्योऽभ्यनुज्ञाता गच्छ देवि ! यथासुखम् ।।

सूर्यार्घ्य

जलपात्र के बचे हुए जल में अक्षत, कुंकुम और पुष्प डाल लें, फिर सूर्य के सामने जाकर इस प्रकार अर्घ्य दें, कि ऊपर से गिरता हुआ जल आपके चेहरे और हृदय के समानान्तर हो, जिसकी सूर्य रश्मियां भेदन करते हुए आपके चेहरे और हृदय का भी स्पर्श करे । साथ में निम्न मन्त्र का उच्चारण करें—

ॐ सूर्य देव सहस्रांशो तेजो राशे जगत्पते ।
अनुकम्पय मां भक्त्या गृहाणार्घ्यं दिवाकर ।।

मध्यरात्रि में भी एक संध्या की जाती है, जिसे तुरीया संध्या कहते हैं, लेकिन यह सभी साधकों के लिए अभीष्ट नहीं है, साधना की उच्चतर स्थिति तथा विशिष्ट गुरु कृपा प्राप्त साधक ही इसे गुरु आज्ञा से करते हैं ।

इस प्रकार साधारण साधकों को कम से कम नित्य प्रति प्रातः सायं संध्या करना नितान्त आवश्यक एवं जीवन की अनिवार्य आवश्यकता है ।

गायत्र्येव तपोयोगः साधनं ध्यानमुच्यते ।
ब्रह्मवर्चस रूपा च नातः किंचित् ब्रह्मतरम् ।।

गायत्री ही तप है, गायत्री ही योग है, गायत्री ही ध्यान और साधना है, गायत्री ब्रह्मवर्चस्व रूपा है, इससे बढ़कर सिद्धिदायक साधना और कोई नहीं । ●

आइये आह्वान करें महालक्ष्मी का
सर्व शक्तियों सहित
इस दीपावली पर्व पर
शास्त्रोक्त
दीपावली महापूजन विधान

महालक्ष्मी सभी शक्तियों की केन्द्र बिन्दु है। इस एक शक्ति से ही सारी शक्तियों का, महाविद्याओं का प्रदुर्भाव हुआ है। दीपावली एक महासिद्धि पर्व है, केवल एक पर्व मात्र नहीं। इस दीपावली पर्व पर प्रत्येक साधक को अपने घर में विशेष पूजन अवश्य करना है, और ऐसी महापूजा हो कि इस दिन की जली ज्योति पूरे वर्ष घर में जगमग करती रहे। इस दिन जो प्रसन्नता का वातावरण बने वह पूरे वर्ष बना रहे। इस दिन जो सकल्प लें, आराध्या लक्ष्मी का जो आह्वान करें, वह पूर्ण हो।

महालक्ष्मी साधना का दीपावली पर्व केवल इस लिए नहीं मनाया जाता कि इस दिन भगवान श्रीराम लंका विजय कर अपने घर अयोध्या वापस पधारे थे, और अयोध्या वासियों ने घर-घर दीप जला कर प्रसन्नता प्रगट की तथा भगवान श्रीराम का स्वागत किया। ये आख्यान तो जन-जन में इस विशेष दिवस का महत्व प्रगट करने के लिए प्रतीक के रूप में हमारे सिद्ध मुनियों, योगियो ने लिखा। यदि केवल यही एक कारण होता तो इस दिन लक्ष्मी की पूजा क्यों की जाती? क्यों एक नये कार्य का संकल्प लेकर नव वर्ष के रूप में इसे मनाया जाता?

यह दिवस एक महासिद्धि दिवस है, और इसे सम्पूर्ण भारत में अलग-अलग रूपों में जन मानस में मनाया जाता। पंजाब में वैशाखी उत्सव के रूप में, केरल में

पौंगल के रूप में, उत्तर भारत में दीपावली के रूप में, दक्षिण में गुड़ीपाड़ा पर्व के रूप में मनाया जाता है।

जहां-जहां उस क्षेत्र के ऋषियों, विद्वानों ने इसे जिस रूप में जन मानस के सामने स्पष्ट किया, उसी रूप में जन मानस एक उत्सव के रूप में इसे मनाने लगा। सिद्ध मुहूर्त प्रत्येक जगह एक ही रहता है और दीपावली का मुहूर्त भी ऐसा ही मुहूर्त है, यह ऐसा महत्वपूर्ण समय है, जब शक्ति सकाम रूप में प्रवाहित रहती है, इस पर्व के द्वारा हम उस महाशक्ति लक्ष्मी को धन्यवाद देते हैं जिसके कारण हम इस जगत में अपना अस्तित्व रखे हुए हैं, जिसके कारण से इस विश्व में सुन्दर वस्तुएं हैं, मन्दिर-देवालय हैं, आभूषण और सुन्दर वस्त्र हैं, जिसके कारण स्वादिष्ट पदार्थ हैं, जिसकी कृपा से सुगन्ध है, वनस्पति है, इसके साथ ही हम इस महापर्व पर महालक्ष्मी से यह भी प्रार्थना करते हैं कि जिस तरह तुम्हारा प्रकाश इस विश्व में सम्पूर्ण रूप से फैला हुआ है वही प्रकाश हमारे घर में भी पूर्ण रूप से प्रवाहित हो। हम भी जगत में रहते उन सभी सुखों का आस्वादन कर सकें, जो आपकी कृपा से विद्यमान है व्याप्त है।

महालक्ष्मी सब कुछ तुम ही तुम हो

यह मानव स्वभाव रहा है कि जो भी वस्तु उसे अच्छी लगती है, उसका संग्रह करना प्रारम्भ कर देता है। कोई पशु-पक्षी अपने स्वयं के लिए साल भर का चारा-दाना एक साथ लाकर नहीं रखता, जबकि उसके सामने पूरा हरा-भरा जंगल होता है। इस संग्रह प्रवृत्ति के पीछे कारण केवल इतना ही है कि मनुष्य में एक आत्म विश्वास की कमी है, वह जानता है कि यदि किसी कारण वश बुरे दिन देखने पड़ गये तो और कोई भी काम नहीं आयेगा, चाहे वह मित्र हो, रिश्तेदार हो अथवा भाई हो या और कोई अन्य। उसके पास जो संग्रह किया हुआ है वही उसके लिए उपयोगी रहेगा। अब प्रश्न उठता है कि किस-किस चीज का संग्रह करें, दुनियां में लाखों-लाखों वस्तुएं हैं और दिन-प्रतिदिन के क्रम में कई वस्तुओं की आवश्यकता पड़ती है तो इन सब का केन्द्र बिन्दु है लक्ष्मी। लक्ष्मी अपने सम्पूर्ण रूप में मुख्य रूप से १०८ स्वरूपों में विद्यमान रहती है. और इन १०८ शक्ति-स्वरूप नामों से ही संसार की सभी क्रियाएं चलती हैं। लक्ष्मी के ये १०८ नाम निम्न प्रकार से हैं—

१-महामाया, २-महालक्ष्मी, ३-महावाणी, ४-माहेश्वरी, ५-महादेवी, ६-महारात्रि, ७-महिषासुरमर्दिनी ८-कालरात्रि, ९-कुहूः, १०-पूर्णा, ११-नन्दाधा, १२-भद्रिका, १३-निशा, १४-जया, १५-रिक्ता, १६-महाशक्ति, १७-देवमाता, १८-कृशोदरी, १९-शचीन्द्राणी, २०-शक्रनुता, २१-शंकरप्रियवल्लभा, २२-महावराहजननी, २३-मदनोन्मथनी, २४-तारा, २५-वैकुण्ठनाथरमणी, २६-विष्णुवक्षस्थलस्थिता, २७-विश्वेश्वरी, २८-विश्वमाता, २९-वरदा, ३०-शिवा, ३१-शूलिनी, ३२-चक्रिणी, ३३-पाशिनी, ३४-शंखधारिणी, ३५-गदिनी, ३६-मुण्डमाला, ३७-कमला, ३८-करुणालया, ३९-पद्माक्षधारिणी, ४०-महाविष्णुप्रियंकरी, ४१-गोलोकनाथरमणी, ४२-गोलोकेश्वरपूजिता, ४३-तारिणी, ४४-गंगा, ४५-यमुना, ४६-गोमती, ४७-गरुडासना, ४८-नर्मदा, ४९-सरयूस्तापी, ५०-कावेरी, ५१-किशोरी ५२-संतापहारिणी, ५३-सर्वकामप्रदा, ५४-मातंगी, ५५-पयस्विनी, ५६-केशवनुता, ५७-महेन्द्रपरिवन्दिता, ५८-ब्रह्मादिदेवनिर्माणकारिणी, ५९-देवपूजिता, ६०-कोटिब्रह्माण्डमध्यस्था, ६१-कोटिब्रह्माण्डकारिणी, ६२-श्रुतिरूपा, ६३-श्रुतिकरी, ६४-श्रुतिस्मृतिपरायणा, ६५-इन्दिरा, ६६-सिन्धुतनया, ६७-केदारस्थलवासिनी, ६८-लोकमातृका, ६९-त्रिलोकजननी, ७०-तन्त्रा, ७१-तन्त्र-मन्त्रस्वरूपिणी, ७२-तरुणी, ७३-तमोहन्त्री, ७४-मंगला, ७५-मंगलायतना, ७६-मधुकैटभमर्दिनी, ७७-शुम्भासुरविनाशिनी, ७८-निशुम्भादिहरा, ७९-माता, ८०-हरिशंकरपूजिता, ८१-सर्वदेवमयी, ८२-सर्वा, ८३-शरणागतपालिनी, ८४-शरण्या, ८५-शम्भुवनिता, ८६-सिन्धुतीरनिवासिनी, ८७-गन्धर्वगानरसिका, ८८-गीता, ८९-गोविन्दवल्लभा, ९०-त्रैलोक्यपालिनी, ९१-तत्वरूपा, ९२-तारुण्यपूरिता, ९३-चन्द्रवली, ९४-सर्वार्थसाधिनी, ९५-चन्द्रमुखी, ९६-चन्द्रिका, ९७-चन्द्रपूजिता,

९८-चन्द्रा, ९९-शशांकभगिनी, १००-गीतवाद्यपरायणा, १०१-सृष्टिरूपा, १०२-सृष्टिकरी, १०३-संहारकारिणी, १०४ सृष्टि, १०५-सुखसौभाग्यसिद्धिदा, १०६-धनेश्वरी, १०७-वागेश्वरी, १०८-सर्वानन्दा ।

इस प्रकार लक्ष्मी में ही एक तरह से सम्पूर्ण विश्व समाया हुआ है ।

और जहां लक्ष्मी की पूजा, साधना होती है वहां लक्ष्मी अपनी विशेष नौ पीठ शक्तियों सहित विराजमान होती है । अर्थात् जहां लक्ष्मी है वहां ये नौ पीठ शक्तियां अवश्य रहती हैं —

लक्ष्मी की पीठ शक्तियां

१-इच्छा, २-ज्ञान, ३-क्रिया, ४-कामिनी, ५-रति, ६-रतिप्रिया, ७-कामदायिनी, ८-नन्दा, ९-मनोन्मनी ।

अर्थात् जहा लक्ष्मी है वहीं इच्छाओं का, ज्ञान का, सागर है, रति सुख, काम सुख, मनोइच्छापूरिणी वहीं विद्यमान होती है ।

और जहां लक्ष्मी अपना आसन ग्रहण करती है अर्थात् जिस घर में लक्ष्मी का आगमन होता है, तो इस आगमन के साथ ही लक्ष्मी की सोलह चन्द्र कलाए घर के वातावरण को आलोकित कर देती हैं—

लक्ष्मी की चन्द्र कलाएं

१-अमृता, २-मानदा, ३-पूषा, ४-पुष्टि, ५-तुष्टि, ६-रति, ७-धृति, ८-शशिनी, ९ चन्द्रिका, १०-कान्ति, ११-ज्योत्सना, १२ श्री, १३-प्रीति, १४-अंगदा, १५-पूर्णा, १६-पूर्णामृता ।

यह याद रखें कि समुद्र मन्थन के पश्चात् लक्ष्मी ने स्वयं ऋषियों-मुनियों को कहा कि देवताओं में तो मैं निवास करूंगी, पर मृत्युलोक में मैं भ्रमण करूंगी, इसका तात्पर्य यह है कि जहां लक्ष्मी का स्वागत होगा, जहां उसकी पूजा होगी जहां उसकी कामना होगी, वहां लक्ष्मी अवश्य आयेगी, जहां-जहां पाप-दोष से युक्त होकर व्यक्ति इच्छा हीन, क्रिया हीन, ज्ञान हीन हो जायेगा, गर्व, घमण्ड, अभिमान के मद में लक्ष्मी की उपेक्षा करेगा, वहां से लक्ष्मी निकल जायेगी, क्योंकि लक्ष्मी तो चंचला है ।

इस वर्ष कुछ विशेष करना है

लक्ष्मी की पूजा आप प्रति वर्ष करते हैं, और दरिद्र से दरिद्र व्यक्ति भी दीपावली की रात्रि लक्ष्मी पूजा अवश्य करता है, पर आज-कल तो कुछ ऐसा हो गया है कि स्वयं तो उत्सव मनाते हैं, और किसी पण्डित को बुला कर कह देते हैं कि हमारे घर लक्ष्मी पूजन कर देना । कुछ लोग लक्ष्मी की पूजा रात-रात भर जुआ खेल कर करते हैं, ऐसी स्थिति में वहां लक्ष्मी कैसे रुक सकती है ?

आप साधक हैं, गुरुदेव के शिष्य हैं, तन्त्र मन्त्रों में कुछ जानते हैं, तो फिर आप स्वयं अपने पूरे परिवार के साथ बैठ कर पूर्ण विधि-विधान सहित स्वयं लक्ष्मी पूजा, दीपावली पूजन क्यों नहीं करते ? जो कार्य आप स्वयं करेंगे उसका प्रभाव तो निश्चय ही अलग ही होगा, क्योंकि तब आपके प्राणों से लक्ष्मी का आह्वान होगा, एक पुकार उठेगी कि "हे महालक्ष्मी ! मैं तेरा साधक तुझे तेरी सभी कलाओं, सभी पीठ शक्तियों सहित आह्वान कर रहा हूं, और वर्ष भर तेरा पूजन करता रहूंगा, तेरे निर्देशानुसार अपना कार्य करूंगा ।" तो ऐसा कोई कारण नहीं कि लक्ष्मी की कृपा आप पर न हो । जो देवी अपने भक्तों के यहां विचरण करती है उसकी पूजा तो अवश्य ही होनी चाहिए । ऐसा ही पूज्य गुरुदेव का संदेश है ।

आगे पत्रिका के प्रारम्भि पृष्ठों में लक्ष्मी पूजा के विशेष मुहूर्त दिये गये हैं । इसके अतिरिक्त बही-खाता इत्यादि लाने और उनका पूजन करने का भी मुहूर्त स्पष्ट है । मेरा तो यह निवेदन है कि जो गृहस्थ व्यक्ति नौकरी पेशा हैं, उन्हें भी अपने घर में दीपावली के दिन हिसाब-किताब की एक पुस्तक लाकर अवश्य पूजन करना चाहिए, और नियमित रूप से हिसाब आय-व्यय इत्यादि विवरण उसमें दर्ज करते रहें ।

इस बार लक्ष्मी पूजन में हम गणपति पूजन करेंगे, नवग्रहों का पूजन करेंगे, भैरव का पूजन करेंगे, लक्ष्मी के १०८ स्वरूपों का पूजन कर लक्ष्मी की नव शक्तियों का आह्वान करेंगे, षोडश चन्द्र कलाओं का आह्वान कर लक्ष्मी के विशेष महा स्वरूपों जो कि कार्यकारी स्वरूप है, उनका पूजन करेंगे। साधना में प्रयुक्त होने वाले प्रत्येक सामग्री का विधि-विधान सहित पूजन कर एक सम्पूर्ण शास्त्रोक्त विधान से क्रियाएं सम्पन्न करेंगे, और इन सब पूजन प्रक्रियाओं का आधार रहेगा हमरी गुरु-भक्ति, लक्ष्मी के प्रति हमारी आस्था एवं श्रद्धा, शुद्ध पूजन पद्धति, प्रसन्न मनःस्थिति और अपने परिवार के साथ।

इस बार पूजन में जो आवश्यक सामग्री काम में आयेगी उसकी सूची बहुत लम्बी है, लेकिन जो विशिष्ट वस्तुएं कार्य में ली जाएंगी उनका विवरण इस प्रकार है—

१-भगवती लक्ष्मी का प्रामाणिक दिव्य मन्त्र सिद्ध चित्र, २-महालक्ष्मी स्थापना महायन्त्र, ३-महागणपति विग्रह, ४-लक्ष्मीअष्टवक्षमारण चक्र (लक्ष्मी सम्बन्धी बाधाओं के निवारण हेतु), ५-नवग्रह पूजन यन्त्र, ६-नवपदात्मक श्रीचक्र, ७-सिद्ध लक्ष्मी गुटिका, ८-श्रीविद्या बाला सुन्दरी यन्त्र, ९-लक्ष्मी पीठ शक्ति चक्र, १०-कमलात्मिका चन्द्र-कला सिद्धि चक्र, ११-वसुधा लक्ष्मी मन्त्रों से आपूरित गोमती चक्र, १२- ज्येष्ठा लक्ष्मी मन्त्र आपूरित मोतीशंख, १३-लक्ष्मी वरवरद, १४-सर्व सिद्ध कमला तन्त्र, १५-कमल-गट्टा माला, १६-महामाया त्रिभुज, १७-ऋद्धि-सिद्धि चैतन्य गुटिका, १८-सद्गुरुदेव निखिल श्रीफल, १९-दारिद्रय-शमन हेरम्ब, २०-अष्टलक्ष्मी फल, २१-कामदायिनी मुद्रिका।

इसके अतिरिक्त पूजन में आवश्यक अन्य सामग्रियां जो कि साधक स्थानीय रूप से प्राप्त नहीं कर सकते हैं, वह इस पैकेट में साथ ही भेज दी जाएंगी।

साधना का विधान

इस बार महालक्ष्मी का जो विशेष अनुष्ठान प्रत्येक शिष्य अपने घर में करेंगे, वह अत्यन्त विस्तृत है, अतः पत्रिका में संक्षिप्त रूप में देना उचित नहीं रहता। इसके लिए अलग से एक १६ पेज की पुस्तिका लिखी गई है, जिसमें ऊपर लिखी सारी सामग्रियों को किस प्रकार प्रयोग में लाना है, गणपति पूजन, भैरव पूजन, नवग्रह पूजन आदि किस प्रकार करना है? लक्ष्मी आरती, पुष्पांजलि इत्यदि का क्या विधान रहेगा? यह विवरण सूक्ष्म रूप में सरल भाषा में पूज्य गुरुदेव के अमृत वचनों पर आधारित है।

दीपावली पर्व पर पूज्य गुरुदेव अपने शिष्यों पर विशेष रूप से मेहरबान हो जाते हैं। दीपावली पूजन का यह पैकेट तैयार कर बहुत ही कम न्योछावर राशि— रुपये-३६०) में ही भेजने का आदेश कार्यालय को दिया है। पूजन सामग्री का मन्त्रानुष्ठान कार्य चल रहा है और सितम्बर प्रथम सप्ताह के बाद यह सामग्री सदस्यों को भेजने की व्यवस्था हो जायेगी। इन सामग्रियों में कई दुर्लभ सामग्रियां हैं और इस बार आप जो पूजन करेंगे, वह पूरे वर्ष याद रहेगा। लेकिन निवेदन है कि लक्ष्मी पूजन केवल दीपावली के दिन ही सम्पन्न कर छोड़ नहीं दे, नित्य लक्ष्मी साधना अवश्य करें।

नीचे दिये गये इस प्रपत्र को अभी, अलग कागज पर बना कर भेज दें जिससे कि आपके लिए यह विशिष्ट **"दीपावली १९९२ महालक्ष्मी साधना पैकेट"** समय पर भेजा जा सके।

प्रपत्र

मैं पूज्य गुरुदेव का शिष्य एवं पत्रिका सदस्य हूं तथा पूर्ण विधि-विधान सहित दीपावली महा-लक्ष्मी पूजन सम्पन्न करना चाहता हूं, अतः मुझे शीघ्र ही यह **"दीपावली महालक्ष्मी साधना पैकेट"** भेज दिया जाये, मैं वी०पी० छुड़ाने का वायदा करता हूं।

मेरा पूरा नाम...सदस्यता संख्या........................

मेरा पूरा पता..

हस्ताक्षर

लक्ष्मी का शुद्ध स्वरूप कमला ही है

तांत्रोक्त कमला साधना

तन्त्र शास्त्रों में लक्ष्मी की पूजा कमला स्वरूप में की जाती है और लक्ष्मी से सम्बन्धित पूर्ण तन्त्र को कमला तन्त्र कहा जाता है। दीपावली के दूसरे दिन किया जाने वाला एक विशेष प्रयोग—

देवी कमला महालक्ष्मी स्वरूपा जगत की आधार हैं जिनके बिना सृष्टि के सारे चक्र अधूरे रह जाते हैं। महामाया कमला आद्या शक्ति हैं, जिनकी कृपा दृष्टि से ही ब्रह्मा एवं अन्य देवता शक्ति प्राप्त करते हैं, और जो साधक महामाया पूर्ण लक्ष्मी भगवती कमला को हृदय से नमन करता है, उसकी कभी भी दुर्गति नहीं हो सकती। ऐसा साधक निश्चय ही पूर्ण सिद्धि प्राप्त कर अनन्त, अलौकिक वैभव, धन-धान्य, सम्मान, कीर्ति प्राप्त करता है।

कमला तन्त्र

वास्तव में ही लक्ष्मी की साधना तन्त्र मार्ग से ही सम्भव है और यह कमला साधना द्वारा सहज सम्भव है। कमला तन्त्र में तो स्पष्ट रूप से बताया गया है, कि जीवन में अतुलनीय धन वैभव प्राप्त करने के लिए कमला साधना आवश्यक है, क्योंकि इस साधना के द्वारा ही जीवन में वह सब कुछ प्राप्त हो सकता है, जो कि आज के मनुष्य को चाहिए।

सबसे बड़ी बात यह है कि कमला साधना एक तरफ जहां पूर्ण मानसिक शान्ति और सिद्धि प्रदान करती है, वहीं दूसरी ओर इसके माध्यम से अतुलनीय वैभव और अनायास धन प्राप्ति होती रहती है। तन्त्र में इसके द्वादश नाम स्पष्ट हुए हैं। यदि कोई साधक केवल इन द्वादश नामों का उच्चारण नित्य कर लेता है, तो भी उसे

सिद्धि प्राप्त हो जाती है। फिर यदि कोई कमला जयन्ती के अवसर पर एक बार भली प्रकार से कमला साधना सम्पन्न कर लेता है, तो उसके जीवन में किसी प्रकार का कोई अभाव रह ही कैसे सकता है। कमला के द्वादश नाम निम्नवत् हैं—

१-महालक्ष्मी, २-ऋणमुक्ता, ३-हिरण्मयी, ४-राजतनया, ५-दारिद्र्य हारिणी, ६-अंचना, ७-जया, ८-राजराजेश्वरी, ९-वरदा, १०-कनकवर्णा, ११-पद्मासना, १२-सर्वमांगल्य युक्ता।

कमला प्रयोग

यदि तांत्रिक दृष्टि से कमला साधना सम्पन्न की जाती है, तो निश्चित ही साधक आश्चर्यजनक उपलब्धियां अनुभव करने लगता है, जो तन्त्र के क्षेत्र में थोड़ी बहुत भी रुचि रखते हैं, वे कमला तन्त्र के नाम से परिचित हैं, और वे यह भी जानते हैं कि यह तन्त्र कितना महत्वपूर्ण और दुर्लभ है। एक प्रकार से देखा जाय तो कमला तन्त्र सर्वथा गोपनीय ही रहा है, मगर जो साधक पूर्ण निष्ठा के साथ इस कमला तन्त्र को सिद्ध कर लेता है, उसे जीवन में समस्त सुख, वैभव और सौभाग्य प्राप्त हो जाता है। दरिद्रता तो हमेशा-हमेशा के लिए समाप्त हो जाती है, अनायास धन प्राप्ति की सम्भावनाएं बन जाती हैं, और साधक अपने जीवन में सभी दृष्टियों से पूर्णता प्राप्त करता हुआ सही अर्थों में वैभव युक्त बन जाता है।

इस वर्ष २८-१०-९१ को कमला जयन्ती है, साधकों को चाहिए कि वे प्रातःकाल उठकर स्नान कर अपने पूजा स्थान में बैठ जांय और फिर साधना प्रारम्भ करें। साधना प्रारम्भ करने से पूर्व पूजन सामग्री अपने सामने रख दें, जिसमें जलपात्र, केसर, अक्षत, नारियल, फल, दूध का बना प्रसाद, पुष्प आदि हो। कमला साधना में अष्टगन्ध का प्रयोग ज्यादा महत्वपूर्ण माना गया है, अतः साधकों को चाहिए कि वे पहले से ही अष्टगन्ध प्राप्त कर उसे घोल कर अपने सामने रख ले।

कमला यन्त्र

तांत्रोक्त कमला साधना का आधार **कमला यन्त्र** ही है। क्योंकि यह पूर्ण रूप से प्रभाव युक्त और सिद्धिदायक है। कमला तन्त्र में यन्त्र के बारे में बताया है, कि यह पूर्ण विधि के साथ षट्कोण सहित अष्टदलों से युक्त महत्वपूर्ण यन्त्र हो—

अनुक्तकल्पे यन्त्रस्तु लिखेत्पद्मन्दलाष्टकम्। षट्कोणकर्णिकतन्त्र वेदद्वारोपशोभितम्॥

यह यन्त्र ताम्र पत्र पर अंकित हो, साथ ही साथ कमला तन्त्र में बताया गया है, कि जब तक 'तन्त्रोद्धार' सम्पन्न यन्त्र न हो तो उसका प्रभाव नहीं होता, तन्त्रोद्धार में बारह तथ्य स्पष्ट किये गये हैं, बताया है कि इन तत्वों को सम्पन्न करके ही यन्त्र का प्रयोग करना चाहिए।

कमला तन्त्र के अनुसार—

१- यह शुद्धता के साथ विजय काल में अंकित किया जाना चाहिए, २-इसका पूर्ण रूप से मन्त्रोद्धार हो, ३-यह वाग् बीज से सम्पुटित हो, ४-लज्जा बीज के द्वारा इसका अभिषेक हो, ५-श्री बीज के द्वारा यह यन्त्र सिद्ध हो, ६-काम बीज के द्वारा यह वशीकरण युक्त हो, ७-पद्म बीज के द्वारा यह प्रभाव युक्त हो, ८-जगत् बीज के द्वारा यह आकर्षण युक्त हो, ९-रुद्र बीज के द्वारा वह आकर्षण युक्त हो, १०-मनु बीज के द्वारा मन पर नियन्त्रण प्रदान करने वाला हो, ११-ऐं बीज के द्वारा वैभव प्रदान युक्त हो, १२-रमा बीज के द्वारा सिद्धि दायक हो।

तारं पूर्वं लिखित्वा परमममलं वाग्भवं बीजमन्य
ल्लज्जा श्री बीज-पूर्ववश-करण-तमं काम-बीजं परस्तात् ।
ह् सौः पश्चाद् जनीयंनसूयुतमधः जगत् पूर्विकायः प्रसूत्या
हेन्तं रूपं नमोत्तं निखिल-मनु-विदुर्मन्त्रमुक्तं रमायाः ।।

वास्तव में ही कमला यन्त्र पूर्ण रूप से सिद्ध करना अत्यन्त पेचीदा और श्रमसाध्य कार्य है । इस प्रकार का यन्त्र पूजा स्थान में स्थापित कर साधना प्रारम्भ करें । ऐसा यन्त्र जहां उनके स्वयं के जीवन के लिए तो सौभाग्यदायक तो रहेगा ही, आने वाली कई-कई पीढ़ियों के लिए भी यह यन्त्र भाग्योदयकारक बना रहेगा ।

इस प्रकार के यन्त्र को जल से फिर पचामृत (दूध, दही, घी, शहद और शक्कर) से स्नान कराकर पुनः शुद्ध जल से धोकर लकड़ी के बाजोट पर पीला वस्त्र बिछा कर इस यन्त्र को स्थापित करना चाहिए । फिर साधक अलग पात्र में गणपति की स्थापना करें । दूसरे बाजोट पर नवग्रहों को स्थापित करें और फिर एक थाली रख कर उस पर नया पीला वस्त्र बिछा दें, कपड़े के ऊपर सिन्दूर से सोलह बिन्दियां लगावें सबसे ऊपर चार फिर उनके नीचे चार-चार बिन्दियां चार पंक्तियों में, इस प्रकार कुल १६ बिन्दियां लगा कर प्रत्येक बिन्दी पर एक-एक लौंग तथा इलायची रख कर फिर इसका अष्टगन्ध से पूजन करें और हाथ जोड़ कर निम्न ध्यान मन्त्र का उच्चारण करें—

उद्यन्मार्तण्ड-कान्ति-विगलित कवरीं कृष्ण वस्त्रवृतांगाम् ।
दण्ड लिगं कराब्जैर्वरमथ भुवन सन्दधतीं त्रिनेत्राम् ।।
नाना रत्नैर्विभातां स्मित-मुख-कमलां सेवितां देव-देव-सर्वै ।
भार्यां राज्ञीं नमो भूत स-रवि-कल-तनुमाश्रये ईश्वरीं त्वाम् ।।

जो साधक संस्कृत पढ़े-लिखे नहीं हैं, उनको चिन्ता नहीं करनी चाहिए और धीरे-धीरे शब्द उच्चारण करते हुए यह ध्यान पढ़ सकते हैं ।

फिर अपने सामने 'ॐ नमः शिवाय' मन्त्र से **लक्ष्मी पद्म शंख** स्थापित करें और पुष्प तथा अक्षत अपने सिर पर चढ़ा लें ।

इसके बाद ताम्र पत्र पर अंकित "**कमला यन्त्र**" को जहां सोलह बिन्दियां लगाई हैं, उसी पर पूर्ण श्रद्धा के साथ स्थापित करें, और अष्टगन्ध से इस यन्त्र पर सोलह बिन्दियां लगा दें । ये सोलह बिन्दियां सोलह लक्ष्मी की प्रतीक मानी जाती हैं ।

इसके बाद दोनों हाथों में पुष्प तथा अक्षत लेकर निम्न मन्त्र से अपने घर में भगवती कमला का आह्वान करते हुए यन्त्र पर पुष्प, अक्षत समर्पित करें—

आह्वान मन्त्र

ॐ ब्रह्मा ऋषये नमः शिरसि । गायत्रीश्छन्दसे नमः मुखे । श्री जगन्मातृ महालक्ष्म्यै देवतायै नमः हृदि । श्रीं बीजाय नमः गुह्ये । सर्वेष्ट सिद्धये मम धनाप्तये ममाभीष्टप्राप्तये जपे विनियोगाय नमः सर्वांगे ।

इसके बाद साधक सामने शुद्ध घृत का दीपक लगावें उसका पूजन करें तत्पश्चात् सुगन्धित अगरबत्ती प्रज्वलित करें, ऐसा करने के बाद साधक इस यन्त्र पर कुंकुम समर्पित करें, पुष्प तथा पुष्प माला पहिनाएं, अक्षत चढ़ावें तथा नैवेद्य का भोग लगावें। सामने ताम्बूल, फल, और दक्षिणा समर्पित करें।

तत्पश्चात् साधक को चाहिए कि वह निम्न दुर्लभ कवच का पांच बार पाठ करे जो महत्वपूर्ण है, इसके द्वारा उस यन्त्र का साधक के प्राणों से सीधा सम्बन्ध स्थापित हो जाता है, और साधना सम्पन्न करने पर साधक को ओज, तेज, बल, बुद्धि तथा वैभव प्राप्त होने लग जाता है।

इस कवच का उच्चारण सनत्कुमार ने भगवती लक्ष्मी को प्रसन्न करने के लिए किया था। **कमला उपनिषद्** में भी इस लघु कवच का अत्यन्त महत्वपूर्ण प्रयोग है—

ऐंकारो मस्तके पातु वाग्भवी सर्व सिद्धिदा। ह्रीं पातु चक्षुषोर्मध्ये चक्षुयुग्मे च शांकरी।
जिह्वायां मुख-वृत्ते च कर्णयोर्दन्तयोर्नसि। ओष्ठाधरे दन्त पंक्तौ तालु-मूले हनौ पुनः॥
पातु मां विष्णु वनिता लक्ष्मीः श्रीविष्णु रूपिणी। कर्ण-युग्मे भुज-द्वये-स्तन-द्वन्द्वे च पार्वती॥
हृदये मणि-बन्धे च ग्रीवायां पार्श्वयोर्द्वयोः। पृष्ठदेशे तथा गुह्ये वामे च दक्षिणे तथा॥
स्वधा तु-प्राण-शक्त्यां वा सीमन्ते मस्तके तथा। सर्वांगे पातु कामेशी महादेवी समुन्नतिः॥
पुष्टिः पातु महा-माया उत्कृष्टिः सर्वदावतु। ऋद्धिः पातु सदादेवी सर्वत्र शम्भु-वल्लभा॥
वाग्भवी सर्वदा पातु, पातु मां हर-गेहिनी। रमा पातु महा-देवी, पातु माया स्वराट् स्वयं॥
सर्वांगे पातु मां लक्ष्मीर्विष्णु-माया सुरेश्वरी। विजया पातु भवने जया पातु सदा मम॥
शिव-दूती सदा पातु सुन्दरी पातु सर्वदा। भैरवी पातु सर्वत्र भैरुण्डा सर्वदावतु॥
पातु मां देव-देवी च लक्ष्मीः सर्व-समृद्धिदा। इति ते कथितं दिव्य कवच सर्व-सिद्धवे॥

वास्तव में ही यह कवच जो कि ऊपर स्पष्ट किया गया है यह अपने आप में महत्वपूर्ण है, यदि साधक नित्य इसके ग्यारह पाठ करता है, तो भी उसके जीवन में धन, वैभव, यश, सम्मान प्राप्त होता रहता है।

प्रयोग में इसका पांच पाठ करें, फिर "**कमला माला**" का पूजन करना चाहिए। यह कमला माला विशेष मन्त्रों से सिद्ध और सूर्य उपनिषद् से संगुफित होती है, जो कि वास्तव में ही अत्यन्त महत्वपूर्ण मानी गई है। इस माला को पहले से ही प्राप्त कर रख लेनी चाहिए।

इसके बाद साधक घी के सोलह दीपक लगा लें, फिर निम्न कमला मन्त्र की सोलह माला मन्त्र जप उसी आसन पर बैठे-बैठे करें—

कमला मन्त्र

॥ ॐ ऐं ईं ह्रीं श्रीं, क्लीं ह्सौः जगत्प्रसूत्यै नमः ॥

जब सोलह माला मन्त्र जप हो जाय तब भगवती लक्ष्मी की विधि-विधान के साथ आरती सम्पन्न करें और उस यन्त्र को पूजा स्थान में ही स्थापित रहने दें, तथा **कमला माला** को इस यन्त्र के सामने या यन्त्र के ऊपर स्थापित कर दे। भविष्य में जब भी कमला मन्त्र का जप करना हो तो इसी कमला माला से उपरोक्त मन्त्र की एक माला फेरें।

वस्तुतः यह मन्त्र और यह तांत्रिक प्रयोग अपने आपमें ही दुर्लभ और महत्वपूर्ण है, साधकों को चाहिए कि वे अवश्य ही इस साधना को सम्पन्न करें और अनुभव करें कि आज के युग में भी साधनाएं कितनी शीघ्र और अचूक फल प्रदान करने में समर्थ हैं। ✱

लक्ष्मी वशीकरण साधना

त्रिलोकी माया लक्ष्मी के ये तीन प्रयोग

जिनकी सिद्धि से लक्ष्मी वशीभूत हो जाती है

लक्ष्मी साधना के अनुष्ठानों में सबसे बड़ी बात यह होती है कि यह सभी प्रयोग बड़े ही सहज और सरल होते हैं, लेकिन जो साधक अनिश्चित मन से भ्रम में और आस्थाहीन होकर प्रयोग करता है तो उसे सफलता कैसे मिल सकती है ? लक्ष्मी का वास तो उसके अपने भक्तों के यहां ही रहता है, और अपने जिस भक्त पर वह कृपा कर देती है वह निहाल हो जाता है और जिस कर्महीन भाग्यहीन व्यक्ति पर लक्ष्मी की कृपा नहीं होती वह तो दर-दर की ठोकरें ही खाता है।

तन्त्र, साधना का सर्वोत्तम स्वरूप है, जो कार्य केवल मन्त्र के माध्यम से नहीं हो सकता, वह तन्त्र के माध्यम से सहज सरल रूप से सम्भव हो जाते हैं, तन्त्र हमेशा शुद्ध रूप में ही किया जाना चाहिए, और इसका उद्देश्य भी शुद्ध होना आवश्यक है। तन्त्र का तात्पर्य केवल मारण, मोहन, वशीकरण ही नहीं है, तन्त्र का तात्पर्य है कि शुद्धतम रूप से शास्त्रोक्त विधि से कार्य का संपादन करना।

आगे कुछ विशिष्ट प्रयोग जो कि कार्तिक मास में ही सम्पन्न किये जाने चाहिए, स्पष्ट किये जा रहे हैं। और इनकी सरलता में ही इनकी सफलता छिपी है, ये सभी प्रयोग पूर्ण भक्ति भाव से साधक अवश्य ही सम्पन्न करें—

शास्त्रों में केवल कार्तिक कृष्ण अमावस्या को ही दीपावली नहीं कहते, अपितु पूरे कार्तिक मास को ही "लक्ष्मी मास" या "दीपावली मास" कहा गया है, कई साधकों ने तो कार्तिक के तीस दिनों में तीस प्रयोग सम्पन्न किये और रंक से राजा बन कर दिखा दिया कि यदि कोई साधक पक्का निश्चय कर ही ले तो वह अद्वितीय रूप ने लक्ष्मी सिद्ध कर सकता है।

नीचे कुछ अत्यन्त ही दुर्लभ प्रयोग साधकों के लिए स्पष्ट कर रहा हूं उनको चाहिए कि वे इन प्रयोगों को सम्पन्न करें और मेरा तो अनुभव यह रहा है कि तन्त्र के इन तीनों प्रयोगों को वे सम्पन्न करें, जिससे कि उनके जीवन में अद्वितीय सफलता प्राप्त हो सके।

१-गुरु गोरखनाथ कृत लक्ष्मी कीलन प्रयोग

गोरखनाथ ने इस प्रयोग को अत्यन्त ही महत्वपूर्ण बताया है और यह कहा है कि अन्य कोई भी तन्त्र खण्डित हो सकता है, परन्तु यह प्रयोग अपने आप में कभी कमजोर नहीं होता, इसका निश्चित और अनुकूल परिणाम प्राप्त होता ही है, मेरे व्यक्तिगत अनुभव में भी यह अपने आप में दुर्लभ और महत्वपूर्ण प्रयोग है और इसमें निश्चय ही पूर्ण सफलता प्राप्त होती है।

यह प्रयोग कार्तिक शुक्ल पक्ष नवमी को ही सम्पन्न किया जाता है, इस वर्ष यह दिवस ३-११-९२ को ही आ रहा है अतः साधकों को चाहिए कि इस दिन इस प्रयोग को अवश्य ही सम्पन्न करें।

इस दिन, रात्रि को साधक नित्य क्रिया सम्पन्न कर पीले आसन पर या मृगछाला पर उत्तराभिमुख होकर बैठें सामने पांच तेल के दीपक लगा दें फिर एक सफेद कागज पर गोरखनाथ प्रणीत निम्न लक्ष्मी कीलन यन्त्र अंकित करें इसे चन्दन से, केसर से, अथवा कुंकुंम से अंकित किया जा सकता है—

लक्ष्मी कीलन यन्त्र

९	९
९	९

इसके बाद इस यन्त्र के बीच में गोरखनाथ मन्त्रसिद्ध **"सियारसिंगी"** को स्थापित करें इस बात का ध्यान रखें कि पहले किसी पूजा या प्रयोग में उपयोग की गई सियारसिंगी का उपयोग नहीं किया जा सकता, इसके अलावा यह प्रामाणिक सियारसिंगी होनी चाहिए, और गुरु गोरखनाथ ने अपने ग्रन्थ में जिस प्रकार से बताया है उस प्रकार से सिद्ध होनी चाहिए।

इसके बाद सियारसिंगी पर निम्न मन्त्र का उच्चारण करते हुए पुष्प चढ़ावें, इसमें किसी भी प्रकार के पुष्पों का प्रयोग किया जा सकता है, दो बार मन्त्र पढ़ कर एक पुष्प चढ़ावें, इस प्रकार साधकों को मात्र १०८ पुष्प चढ़ाने हैं और २१६ बार मन्त्र का उच्चारण करना है, इसे सम्पुटित प्रयोग कहा जाता है, इसका तात्पर्य यह है कि पुष्प के ऊपर और नीचे लक्ष्मी को आबद्ध किया जाता है।

मन्त्र

कामरूपदेश कामाख्या देवी जहां बसे लक्ष्मी महारानी। आवे घर में जम कर बैठे, सिद्ध होय, मेरो सब कारज सिद्ध करे, जो चाहूं सो होय ह्रीं ह्रीं फट्॥

जब मन्त्र जप पूरा हो जाय तो साधक रात को वहीं पर शयन करे, इस बात का ध्यान रहे कि सारी रात एक घी और एक तेल का दीपक जलता रहे। सोने से पहले साधक जिन-जिन प्रश्नों के उत्तर जानना चाहता है, वे सारे प्रश्न एक कागज पर लिख कर अपने सिरहाने तकिये के बीचे रख कर सोवे या अपनी जो इच्छाएं हों, उनको लिख कर भी सिर के नीचे रख कर सो सकता है।

रात में अवश्य ही पूछे गये प्रश्नों का उत्तर प्राप्त होता है, उदाहरण के लिए लाटरी का नम्बर क्या हो सकता है, या अमुक के साथ व्यापार करना ठीक रहेगा या नहीं, आदि किसी भी प्रकार के प्रश्न हो सकते हैं।

प्रात:काल उठ कर उस सियारसिंगी को घर में जहां रुपये पैसे रखते हैं, वहां भली प्रकार से स्थापित कर दें और जो कागज पर लक्ष्मी कीलन यन्त्र अंकित किया था, उसको समेट कर एक ताबीज में भर कर उसे गले अथवा बांह में धारण कर लें।

यों लक्ष्मी आबद्ध यन्त्र जो आप पहिनेंगे, वह तो अक्षय भण्डार और अटूट लक्ष्मी प्राप्ति के लिए वरदान स्वरूप है ही।

२-मत्स्येन्द्र नाथ कृत लक्ष्मी आबद्ध प्रयोग

गुरु मत्स्येन्द्र नाथ तो गोरखनाथ से भी ज्यादा सिद्ध योगी हुए हैं, तन्त्र के वे साक्षात् अवतार थे, उन्होंने अपनी संहिता में लक्ष्मी आबद्ध प्रयोग को देकर ससार का महान उपकार किया है यह प्रयोग कार्तिक कृष्ण पक्ष की अष्टमी को सम्पन्न किया जाता है, इस दिन को "अहोई दिवस" या "आठा दिवस" कहा जाता है यह शब्द "अष्ट लक्ष्मी" का अपभ्रंश है, इस वर्ष कार्तिक कृष्ण पक्ष की अष्टमी दिनांक १९-१०-९२ को आ रही है, महत्वपूर्ण बात यह है कि इस दिन "अहोई अष्टमी के साथ-साथ चन्द्र पुष्य का योग बन रहा है, अतः साधकों को इस दिन अवश्य ही साधना करनी चाहिए।

इस दिन साधक प्रात:काल उठ कर स्नान कर, पूजा स्थान में बैठ जांय सामने जलपात्र, कुंकुम, अक्षत आदि हो, इस दिन लक्ष्मी को आबद्ध करने के लिए **"वरदायक लक्ष्मीयुक्त गणेश विग्रह"** पूजा का विधान है, यह मत्स्येद्र नाथ द्वारा सम्पादित वरदायक लक्ष्मी गणेश मन्त्र सिद्ध प्राण प्रतिष्ठा युक्त होना चाहिए।

इसके बाद साधक लक्ष्मी गणपति विग्रह को जल से स्नान करा कर फिर पौंछ कर उसके पूरे शरीर पर केसर लगाएं और "ॐ वरदायक महालक्ष्म्यै नमः" मन्त्र से १०८ बार थोड़े-थोड़े पीले रंग के रंगे हुए अक्षत चढ़ावें।

इसके बाद मूल प्रयोग प्रारम्भ होता है, साधक को चाहिए कि वे पहले से ही १०८ पुष्प लाकर रख दें, इस बात का ध्यान रखें कि न तो एक भी पुष्प ज्यादा हो और न ही कम, फिर निम्न मन्त्र का उच्चारण कर, पुष्प चढ़ावें, इस प्रकार क्रम से एक-एक मन्त्र पढ़ता हुआ, एक-एक पुष्प विग्रह पर चढ़ाता रहे।

मन्त्र

ॐ नमो वैताल धरणि गगन बांधूं, आठों दिशा नव नाथ बांधूं, लछमी को घर में बांधूं, वैपार चढ़े, गज तुरंग बढ़े, कनक सरै, सब सिद्ध होय, जो न होय, रुद्र को त्रिशूल खण्डित होय ठं ठं ठं ॥

जब पूरे १०८ पुष्प लक्ष्मी गणपति विग्रह पर चढ़ा दिये जांय तो हाथ जोड़ कर उनसे प्रार्थना करें कि लक्ष्मी गणेश मेरे घर में चिरस्थायी रूप से निवास करें, और फिर उसी दिन उस विग्रह को अपने पूजा स्थान में रख दें या तिजोरी में रख दें अथवा यदि व्यापार हो, या दुकान हो तो उसमें जहां रुपये पैसे रखते हैं, वहां स्थापित कर दें।

३-रावणकृत लक्ष्मी कीलन प्रयोग

रावण अपने आप में तन्त्र का अद्‌भुत् जानकार था, उसने ऋषि कुल में उत्पन्न हो कर उच्चकोटि की तन्त्र साधनाएं सम्पन्न की, और अपने घर को धन धान्य और समृद्धि से सम्पन्न कर दिया **"रावण संहिता"** में इस प्रयोग को अत्यन्त दुर्लभ और महत्वपूर्ण बताया है।

यह प्रयोग प्रति वर्ष कार्तिक शुक्ल पक्ष तृतिया को सम्पन्न होता है, इस बार बुधवार, तारीख-२८-१०-९२ को कार्तिक शुक्ल पक्ष तृतिया आती

है, अतः साधकों को चाहिए कि इस वर्ष यह प्रयोग अवश्य ही सम्पन्न करें।

साधक इस दिन रात्रि को स्नान कर लाल वस्त्र पहन कर उत्तर की ओर मुंह कर बैठ जांय और सामने किसी तांबे के पात्र में कुंकुंम या केसर से निम्न प्रकार का लक्ष्मी आबद्ध यन्त्र बनावें, फिर इस यन्त्र की पूजा करें इस यन्त्र पर अक्षत और पुष्प चढ़ावें।

लक्ष्मी आबद्ध यन्त्र

२	४	६
५	५	५
८	१	६

इसके बाद पहले से ही प्राप्त किये हुए **"नौ लक्ष्मी वरवरद"** प्रत्येक कोष्ठक में एक-एक स्थापित कर दें ये नौ लक्ष्मी वर वरद नौ सिद्धियों के प्रतीक हैं, जो रावण कृत 'ऋषि प्रयोग से मन्त्रसिद्ध प्राणप्रतिष्ठयुक्त हो।

इसके बाद प्रत्येक का जल से, कुंकुंम से, अक्षत और पुष्प से पूजन करें, फिर कमलगटटे की माला से मन्त्र जप वहीं पर बैठे-बैठे करें —

मन्त्र

।। ॐ ह्रीं श्रीं ह्रीं श्रीं ह्रीं श्रीं वर वरद
लक्ष्मी आबद्ध आबद्ध फट् ।।

मन्त्र जप समाप्त होने पर उन सभी लक्ष्मी वरवरद को एक धागे में पिरो कर घर के द्वार पर टांग दें या घर में किसी भी स्थान पर टांग दे, जिससे कि उनको हवा स्पर्श करती रहे, ये लक्ष्मी वरवरद दुकान के द्वार पर टांगे जा सकते हैं।

जितने समय तक इनको स्पर्श कर हवा घर में या दुकान में स्पर्श करेगी तब तक निरन्तर आर्थिक व्यापारिक उन्नति होती रहेगी, प्रयत्न यह करना चाहिए कि धागा मजबूत हो और पूरे वर्ष भर ये लक्ष्मी वर वरद टंगे रहने चाहिए, जिससे कि इनसे स्पर्श कर वायु घर में या दुकान मे प्रवेश होती रहे।

वास्तव में ही यह एक दुर्लभ और महत्वपूर्ण प्रयोग है जो साधकों को ठीक समय पर सम्पन्न करना चाहिए। ●

शक्तिर्नारायणस्याहं नित्या देवी सदोदिता।
तस्या मे पंचकर्माणि नित्यानि त्रिदशेश्वर ।।
तिरोभावस्तथा सृष्टि-स्थिति-संहृतिरेव च।
अनुग्रह इति प्रोक्तं कर्म रूपं च पंचकम् ।।
तस्य या परमा शक्तिर्ज्योत्स्नेव हिम दीधितेः।
सर्वावस्थां गता देवी स्वात्म-भूतानपायिनी ।।
अहंता ब्रह्मणस्तस्य सोहमस्मि सनातनी।
नित्य-निर्दोष-निस्सीम-कल्याण गुण शालिनी ।।
अहं नारायणी नाम सा सत्ता वैष्णवी परा ।।

हे इन्द्र ! भगवान नारायण की शक्ति रूपा, दिव्य गुणों से युक्त तथा नित्य स्थित रहने वाली हूं, इस संसार में मेरे पांच कर्म नियत हैं—शक्ति रूप में सभी जीवों में स्थित रहना, सृष्टि की रचना, पालन, संहार तथा सभी जीवों पर दया करना।

चन्द्रमा की चांदनी की तरह, उस परम सत्ता की शक्ति स्वरूपा हूं, सर्वत्र विद्यमान रहने वाली, सभी जीवों में मैं ही व्याप्त हूं।

सनातनी, सोऽहं रूपा, ब्रह्म स्वरूपा, नित्य, दोष रहित, असीम, कल्याणमयी हूं। वह परा-शक्ति रूपा नारायणी तथा वैष्णवी मैं ही हूं।

लक्ष्मी का निवास

'पद्म पुराण' तथा 'ब्रह्मवैवर्त पुराण' लक्ष्मी से सम्बन्धित महाग्रन्थ हैं, जिसमें लक्ष्मी साधना तथा लक्ष्मी चरित्र के सम्बन्ध में विस्तार से लिखा है।

जब समुद्र मन्थन से लक्ष्मी देवी उत्पन्न हुई तब अंगिरा, मरीचि आदि ऋषियों ने उनका पूजन एवं स्तवन कर, निवेदन किया कि हे माता! आप देवताओं में निवास और मृत्यु लोक में भ्रमण करें, इस सम्बन्ध में माता लक्ष्मी ने कहा कि "मैं आप सभी ऋषियों की सलाह से देवताओं में निवास तथा मृत्यु लोक में अवश्य जाऊंगी लेकिन जिनके यहां जाऊंगी उसके सम्बन्ध में स्पष्ट रूप से सुनें"—

उपरोक्त कथन लक्ष्मी का ही है और इसे पढ़ कर पाठक जान सकते हैं, कि लक्ष्मी कहां निवास करती है?

लक्ष्मी ने कहा—

मैं पुण्यवान् नीतिज्ञ गृहस्थ और राजपुरुषों के घर में स्थिर भाव से रह कर पुत्र के समान उनका पालन करूंगी।

गुरु, देवता, माता-पिता, बान्धव, अतिथि, पितृ गण जिनसे रुष्ट रहते हैं, मैं उनके घर नहीं जाऊंगी।

जो व्यक्ति हमेशा चिन्ता करता है और जो सर्वथा भयभीत और शत्रु युक्त गृहस्थ है, वहां पर भी मैं नहीं जाऊंगी।

जो व्यक्ति अत्यन्त पातकी, ऋण ग्रस्त तथा अतिशय कंजूस है वहां मैं पदार्पण नहीं करूंगी।

जिस व्यक्ति ने गुरु से दीक्षा नहीं ली है और जिसके घर गुरु पूजा नहीं होती वहां मैं प्रवेश नहीं करूंगी।

जो सदा शोक पीड़ित, मन्द बुद्धि और स्त्री के वशीभूत है तथा जिसकी स्त्री भ्रष्ट है वहां मैं प्रवेश नहीं करूंगी।

जो कटु भाषी है, हमेशा कलह करता है, जिसके घर में हमेशा कलह होता है और जिसके घर में केवल स्त्रियों की ही प्रधानता रहती है अर्थात् उनका ही कहना मान्य होता है, उनके घर में भी मैं प्रवेश नहीं करूंगी।

जो व्यक्ति हरि पूजा, हरि का गुणगान नहीं करता और जो हरि की प्रसन्नता नहीं चाहता, उसका घर मेरे लिए त्याज्य है।

जो व्यक्ति कन्या-विक्रय, आत्म-विक्रय और वेद-विक्रय करता है, वह हिंसक है, उसका घर नर्क के समान है, वहां मैं कदापि नहीं जाऊंगी।

जो व्यक्ति कृपणता (कंजूसी) के दोष से दूषित होकर माता-पिता, भार्या गुरु-पत्नी, गुरु-पुत्र, अनाथा-भगिनी, कन्या और आश्रय रहित बान्धवों का पोषण न कर सर्वदा धन सचय में लगा रहता है, मैं कभी भी उसके घर नहीं जाऊंगी।

जिस व्यक्ति के दन्त अपरिष्कृत (गन्दे), वस्त्र मलिन, मस्तक रुक्ष अर्थात् रूखा और जिसका हास्य (हंसी) विकृत है, अर्थात् जो बिना बात विकृत रूप से हंसता है उसके घर में कभी नहीं जाऊंगी।

जो मनुष्य दूसरों को मल-मूत्र त्याग करते समय देखता है और रात्रि को पूर्णतः नग्न सोता है, उसके घर में प्रवेश नहीं करूंगी।

जो व्यक्ति सायंकाल को शयन करता है, उसके घर में पदार्पण नहीं करूंगी।

जो व्यक्ति नाखून से घास को काटता है अथवा जमीन को नाखून से कुरेदता है, जिसके शरीर पर और पैर पर मैल रहता है, उस पर मेरी कभी कृपा नहीं होगी।

जो व्यक्ति मल-मूत्र त्याग कर दूसरों को प्रणाम करता है, अथवा पुष्प तोड़ता है, वह भी मेरी कृपा का अधिकारी नहीं हो सकता।

जो मन्द बुद्धि, सठ (मूर्ख) बिना दक्षिणा के यज्ञ कराने वाला व्यक्ति है, वह अपना जीवन मेरे बिना ही बिताता है।

जो चिकित्सक, पाचक और देवल, क्रोध वश किसी विवाह कार्य में, धर्म कार्य में बाधा पहुंचाता है वह मेरी कृपा से वंचित होगा।

जो व्यक्ति दिन में स्त्री का संसर्ग करता है उसके घर मैं कभी नहीं जाऊंगी।

जो बासी फूल सूंघता है, बहुत से आदमियों के साथ सोता है, टूटे-फूटे आसन पर बैठता है, उसे मैं दूर से छोड़ दूंगी।

चिता, अगार. अस्थि, भस्म, द्विज, गाय, तुस और गुरु इनको जो पैर से स्पर्श करता है उसे मैं त्याग दूंगी।

ऋषियों ने पूछा कि—हे देवि! आप कहां निश्चल अर्थात् स्थिर होकर रहती हैं, कृपया वह भी वर्णन करें—

जिसकी गृहणी सुन्दरी और कलह हीना है, मैं वहां निवास करती हूं।

जहां अन्न को तुस रहित अर्थात् परिष्कृत रूप से साफ करके प्रयोग में लाया जाता है वहां मेरी स्थिति अवश्य जानी जायेगी।

जो धर्मशील, जितेन्द्रिय, स्वाभिमानयुक्त पर गर्व रहित है तथा पर दुःख कातर (दूसरों के दुःख में दुःखी होने वाला) मैं सर्वदा ऐसे व्यक्ति के यहां निवास करती हूं।

जहां गुरु पूजा, देव पूजा नियमित रूप से होती है, वहां मेरा स्थान होगा।

जो स्थिर रूप से पूर्ण स्नान तथा शीघ्र भोजन ग्रहण कर लेता है, उसके यहां मैं निवास करती हूं।

जो सुगन्धित पुष्प को पाकर नहीं सूंघता, नग्न स्त्री को नहीं देखता वही मेरा प्रिय है।

जिस पुरुष में त्याग, सत्य और शौच ये तीन महान् गुण हैं, मैं उसके घर में वास करती हूं।

आंवला फल, गोबर, शंख, शुक्ल वस्त्र, चन्द्र, महेश्वरी, नारायण, वसुन्धरा, उत्सव, मन्दिर इन स्थानों पर मैं नित्य अवस्थान करती हूं।

जो स्त्री गुरु-भक्ति युक्ता एवं पति परायणा है, जो सर्वदा सतुष्टा, धीरा, प्रियवादिनी, सौभाग्य-युक्ता, लावण्यमयी, सुशीला और पतिव्रता है, उस स्त्री में मैं सदैव अवस्थान करती हूं। ●

आप जो कहें, उसी अनुरूप कार्य हो
यही है
आज्ञा सिद्धि का शास्ता प्रयोग

संसार चक्र में व्यक्ति को नित्य प्रति हजारों प्रकार के कार्य करने पड़ते हैं और याद रखें प्रार्थना और याचना केवल देवता, दुर्गा और गुरु से ही की जाती है। जीवन में नम्रता होनी चाहिए, दया होनी चाहिए, लेकिन याचना नहीं। याचना एक प्रकार से भिखारीपन का प्रतीक है, जो कार्य आप अपने मित्र को, सहयोगी को अथवा अपने अधीनस्थ कर्मचारियों को कहें और वे आपकी बात मानें और उसी के अनुरूप कार्य करें, इस प्रकार की सिद्धि "शास्ता सिद्धि" कहलाती है।

पूज्य गुरुदेव के प्राचीन पाण्डुलिपी संग्रह में से एक विशेष प्रयोग शास्ता सिद्धि—उनके शिष्यों के लिए, साधकों के लिए, पाठकों के लिए प्रथम बार—

शास्ता सिद्धि के अधिष्ठाता देव श्री हरिहर पुत्र गणपति ही हैं और इसमें भगवान् शिव की अर्द्ध नारीश्वर स्वरूप में पूजा कर अमावस्या की रात्रि को यह प्रयोग सम्पन्न करना चाहिए।

इस साधना में सामग्री रूप में मन्त्रसिद्ध 'अर्द्धनारीश्वर यन्त्र' तथा 'महा शास्ता कुण्डल' अपने सामने रख कर दोनों के आगे एक-एक दीपक लगा दें। साधक लाल वस्त्र धारण कर अपने इष्टदेव आदिदेव, भगवान शिव तथा गुरु का ध्यान कर पूर्व दिशा की ओर मुंह कर हाथ में जल लेकर संकल्प करें, उसके पश्चात् न्यास विधान है।

न्यास का तात्पर्य है अपने बाएं हाथ में जल लेकर दाहिने हाथ से जल को शरीर के अंगों को स्पर्श करना, इस हेतु एक तांबे के पात्र में शुद्ध जल अवश्य ले लें। ऋषि-न्यास में देवताओं का आह्वान किया जाता है। कर-न्यास में शरीर की शक्तियों को जाग्रत किया जाता है और हृदय-न्यास में आन्तरिक शक्ति को जाग्रत किया जाता है। पूर्ण प्रयोग निम्न प्रकार से है—

विनियोग

ॐ अस्य श्रीशास्ता-मन्त्रस्य अर्द्ध-नारीश्वर ऋषिः, अनुष्टुप् छन्दः, शास्ता देवता, ह्रीं बीजं, श्रीं शक्तिः, वश्यार्थे जपे विनियोगः ।

ऋषि-न्यास

अर्द्ध-नारीश्वराय ऋषये नमः शिरसि । अनुष्टुप् छन्दसे नमः मुखे । शास्ता देवतायै नमः हृदि । ह्रीं बीजाय नमः गुह्ये । श्रीं शक्तये नमः पादयोः । अमुक वश्यार्थे जपे विनियोगः ।

कर-न्यास

ह्रीं हरिहर पुत्राय अंगुष्ठाभ्यां नमः । पुत्र लाभाय तर्जनीभ्यां स्वाहा । शत्रु नाशाय मध्यमाभ्यां वषट् । मद-गज वाहनाय अनामिकाभ्यां हुं । महा-शास्ताय कनिष्ठिकाभ्यां वौषट् । नमः करतल कर पृष्ठाभ्यां फट् ।

हृदय-न्यास

ह्रीं हरि-हर पुत्राय हृदयाय नमः । पुत्र लाभाय शिरसे स्वाहा । शत्रु नाशाय शिखायै वषट् । मद-गज वाहनाय कवचाय हुं । महा शास्ताय नेत्र त्रयाय वौषट् । नमः अस्त्राय फट् ।

अब साधक अपने हाथ में पुष्प एवं पूजन सामग्री लेकर निम्न मन्त्र पढ़ता हुआ शास्ता देव का ध्यान करें, और ग्यारह बार ध्यान मन्त्र पढ़कर सारी सामग्री सामने स्थापित शास्ता कुण्डल के सामने अर्पित कर दें ।

ध्यान मन्त्र

आश्याम-कोमल-विशाल तनुं विचित्रम् । वासोवस नभरुणोत्पलदाम-हस्तम् ।।
उत्तुग रत्न मुकुटं कुटिलाग्र केशम् । शास्तारमिष्ट वरदं शरणं प्रपद्ये ।।

अब साधक गणपति साधना में प्रयोग होने वाली कोई भी माला लेकर शास्ता मन्त्र का जप प्रारम्भ करें, उसी स्थान पर बैठे-बैठे २१ माला मन्त्र जप कर, पुनः हरिहर देव शास्ता देव का ध्यान कर शयन करें । दूसरे दिन पुनः इसी प्रकार प्रयोग करें । कुल मन्त्र जप २४ हजार होने आवश्यक हैं । यह मन्त्र निम्न प्रकार से है—

।। ॐ ह्रीं अर्द्ध-नारीश्वर ह्रीं हरिहर पुत्राय पुत्रलाभाय
शत्रुनाशाय मद्-गज वाहनाय महाशास्ता नमः ।।

इस साधना से साधक के शरीर में शास्ता देव की कृपा से वह ओज और आकर्षण शक्ति आती है, कि वह जो कार्य कहता है, सामने वाला चाहे कितना ही प्रबल और बलशाली हो, उसे मानना पड़ता है ।

पूरे प्रयोग के पश्चात् अर्द्ध-नारीश्वर शिव यन्त्र को भगवान् शिव के मन्दिर में जाकर अर्पित कर दें तथा मन्त्रसिद्ध शास्ता कुण्डल को एक कपड़े में बांध कर गुटिका रूप में बना कर नित्य अपनी जेब में अथवा अपने बटुए में, बैग में रखें ।

इति साधनां कृत्वा सिद्धिः भवेत् ।

चमत्कारिक दुर्लभ सामग्री पर कीजिए

लक्ष्मी साधना

और देखिये

प्रत्यक्ष फल लक्ष्मी प्राप्ति का

किस सामग्री का किस प्रकार प्रयोग किया जाय यही साधना का रहस्य है। साधना के ये उपकरण तो ईश्वर द्वारा प्रदत्त अस्त्र-शस्त्र हैं, जिनकी सहायता से कार्य सिद्धि सरलता से संभव हो सकती है। आगे लक्ष्मी पंचरत्न के ये पांच प्रयोग पाठकों को कार्तिक मास में इसी रूप में अवश्य सम्पन्न करने चाहिए।

जैसा कि पिछले लेख में आपने पढ़ा कि लक्ष्मी का वास कहां होता है, किस घर में लक्ष्मी आने को आतुर रहती है, लेकिन लक्ष्मी का स्वागत भी उसी अनुरूप होना चाहिए, उसको नियमित पूजा आराधना अवश्य होती रहनी चाहिए। जिस प्रकार एक बार भोजन डट कर कर लेने से ऐसा नहीं हो सकता कि आगे कई दिनों तक भोजन की आवश्यकता ही नहीं रहे, ठीक वैसा ही साधना आराधना के सम्बन्ध में है। नियमितता अत्यन्त आवश्यक है और जो भी साधना करें उसमें अपने मन-प्राण रचा-पचा कर साधनात्मक कार्य करें।

लक्ष्मी साधना के नीचे जो पांच प्रयोग दिये जा रहे हैं, उनमें विशेष उपकरणों की आवश्यकता पड़ती है। ये उपकरण सहज सुलभ नहीं होते। इन उपकरणों को भली-भांति देख परख कर जहां भरोसा एवं विश्वास हो वहीं से प्राप्त कर पूजन अनुष्ठान सम्पन्न करने चाहिए। आगे के पांच प्रयोगों में **'गोमती चक्र,' 'एकाक्षी नारियल', 'सियारसिंगी', 'दक्षिणावर्ती शंख', 'त्रिलोह पवित्री'** का प्रयोग आवश्यक है। इसमें जो भी प्रयोग करें, उसकी सामग्री समय रहते अवश्य ही प्राप्त कर लें। कार्तिक मास सिद्ध मास है, दीपावली पर्व लक्ष्मी पर्व है, और इस पर्व पर किसी भी प्रकार से साधना में चूकना नहीं चाहिए। निरन्तर लक्ष्मी अनुष्ठान से दोषों की शान्ति होती है, और लक्ष्मी को आना ही पड़ता है।

साधकगण इन सिद्ध प्रयोगों को सम्पन्न कर अपने अनुभवों को अवश्य ही लिख भेजें।

१-धनदा प्रयोग

यह धनदा प्रयोग दीपावली के दो दिन पूर्व अर्थात् धन-त्रयोदशी को सम्पन्न किया जाता है, इस वर्ष दीपावली २५-१०-९२ को है, और धन त्रयोदशी २३-१०-९२ को है, अतः यह प्रयोग २३-१०-९२ की रात्रि को सम्पन्न करना चाहिए, यह **'गोमती चक्र प्रयोग'** भी कहा जाता है।

रात्रि को लगभग दस बजे स्नान कर पीला आसन बिछा कर उत्तर की ओर मुंह कर साधक बैठ जाएं, कमर से ऊपर कम्बल किसी भी रंग का अथवा पीली धोती ओढ़ सकते हैं, परन्तु कुर्ता या बनियान नहीं पहिनना चाहिए, सामने लकड़ी के एक तख्ते पर मन्त्र सिद्ध प्राणप्रतिष्ठा युक्त **'गोमती चक्र'** रख देना चाहिए, गोमती चक्र के दाहिनी ओर तेल का दीपक लगा लेना चाहिए। इसमें किसी भी प्रकार का तेल प्रयोग में लिया जा सकता है।

इसके बाद निम्न मन्त्र की १०१ मालाएं फेरनी चाहिए, यह माला **कमलगट्टे** की ही हो।

मन्त्र

॥ ॐ ह्रीं धनदायै धन-धान्य समृद्धि
देहि देहि फट् स्वाहा ॥

जब १०१ मालाएं पूरी हो जांय, तो साधक को चाहिए कि वह गोमती चक्र को एक डिबिया में बन्द करके रख दें, फिर दीपावली की रात्रि को जब लक्ष्मी की पूजा हो, तब उसके साथ ही इसी गोमती चक्र की पुनः पूजा करें और बाद में यह गोमती चक्र दुकान पर पैसे रखने के स्थान में या घर में गहने रखने की सन्दूक में रख देना चाहिए, इससे उस वर्ष आश्चर्यजनक रूप से आर्थिक उन्नति प्राप्त होती है, यह प्रयोग महत्त्वपूर्ण है, और सरल होने के साथ-साथ अद्भुत प्रभावयुक्त है।

२-महालक्ष्मी प्रयोग

यह प्रयोग "एकाक्षी नारियल" प्रयोग भी कहा जाता है, इसमें साधक को चाहिए, कि वह मंत्रसिद्ध प्राणप्रतिष्ठायुक्त **"एकाक्षी नारियल"** प्राप्त कर लें, यह दिव्य दुर्लभ वस्तु कही जाती है, फिर रूप चतुर्दशी अर्थात् दीपावली से एक रात्रि पूर्व

(इस वर्ष २४-१०-९२ की रात्रि को) स्नान कर सफेद धोती पहिन कर सफेद आसन पर उत्तर की ओर मुंह कर बैठ जांय, अपने सामने लकड़ी के तख्ते पर सफेद आसन (वस्त्र) बिछा कर उस पर चावलों की ढेरी बनाकर उस पर एकाक्षी नारियल को स्थापित कर लें, नारियल पर कुंकुम या केसर से स्वस्तिक का चिन्ह बना लें और उससे हाथ जोड़ कर प्रार्थना करें कि आप महालक्ष्मी के प्रति रूप हैं, आप जहां कहीं पर भी होते हैं उसके घर में पीढ़ियों तक व्यापार वृद्धि और आर्थिक उन्नति होती रहती है, आप पूर्णता के साथ मेरे घर में स्थापित हों।

इसके बाद तेल का दीपक लगा कर नारियल के सामने ही अर्थात् साधक और नारियल के बीच में लकड़ी के पट्टे पर रख दें, तथा उस रात्रि को निम्न मन्त्र की १०१ मालाएं फेरें—

मन्त्र

ॐ ह्रीं श्रीं एकाक्षो नारिकेलाय मम समस्त समृद्धि देहि देहि फट् स्वाहा ।।

जब मन्त्र जप पूरा हो जाय तब साधक पुनः एकाक्षी नारियल से प्राथना करें, कि आप मेरे घर में धन-धान्य, भवन, कीर्ति, दीर्घायु यश, पुत्र, पौत्र की वृद्धि दें और व्यापार वृद्धि अथवा आर्थिक उन्नति के साथ-साथ मेरे जीवन की सारी इच्छाएं पूरी करें।

वह एकाक्षी नारियल दूसरे दिन उसी स्थान पर बना रहे, दूसरे दिन दीपावली की रात्रि को भगवती लक्ष्मी के पूजन के साथ-साथ एकाक्षी नारियल का भी लक्ष्मी का प्रतीक मान कर पूजन करें, और पूजन की समाप्ति के बाद अपने घर के कमरे में या पूजा स्थान में एकाक्षी नारियल को स्थापित कर दें अथवा लाल कपड़े में लपेट कर दुकान पर रख दें।

ऐसा करने पर साधक के जीवन में निरन्तर व्यापार वृद्धि एवं आर्थिक उन्नति होती रहती है, और भौतिक दृष्टि से वह पूर्णता प्राप्त करता है।

३-आकस्मिक धन प्राप्ति प्रयोग

दीपावली की रात्रि के दो या तीन दिन पहले किसी भी रात्रि को यह प्रयोग सम्पन्न किया जा सकता है, रात को साधक उत्तर दिशा की ओर मुंह कर बैठ जांय, सामने मन्त्रसिद्ध "सियारसिंगी" रख दें, फिर किसी भी माला से नीचे लिखे साबर मन्त्र की दस मालाएं फेरें—

मन्त्र

ॐ नमो महादेवी महाशुक्ला कमलदल निवासी लक्ष्मी माई सत्य की सवाई अचानक धन लेकर आओ माई, करो भलाई, मना करो तो सात समुद्र की दुहाई, ऋद्धि-सिद्धि नहीं लाओगी तो नव नाथ चौरासी सिद्ध की दुहाई ।।

मन्त्र जप करते समय सामने तेल का दीपक लगा लेना चाहिए और जब दस माला पूरी हो जाय, तब उस सियारसिंगी को लाल वस्त्र में बांध कर घर की तिजोरी में रख देना चाहिए, ऐसा करने पर शीघ्र ही मनोवांछित

सफलता प्राप्त होती है, और लॉटरी, घुड़ दौड़ या अन्य किसी उपाय से विशेष आकस्मिक धन प्रप्ति हो जाती है।

यह प्रयोग एक विशिष्ट महात्मा का बताया हुआ है और उन्होंने यह मन्त्र मुझे सिद्ध कराया था।

४-व्यापार वृद्धि प्रयोग

व्यापार बढ़े, बिक्री बढ़े और यदि दुकान पर किसी ने कोई प्रयोग कर दिया हो तो वह हट जाय, इसके लिए यह विशेष साबर प्रयोग है।

इसके लिए **"दक्षिणावर्ती शंख"** की आवश्यकता होती है, यह शंख छोटा या बड़ा किसी आकार का हो सकता है, यह प्रयोग दीपावली के चार या पांच रोज पहले किसी भी रात्रि को सम्पन्न किया जा सकता है।

सामने लाल वस्त्र बिछा कर उस पर दक्षिणावर्ती शंख रख दें, और उसे चावलों से भर दें, फिर नीचे लिखे मन्त्र की दस मालाएं फेरें, मन्त्र जप करते समय तेल का दीपक लगा लें, इसमें किसी भी प्रकार की माला का प्रयोग किया जा सकता है।

मन्त्र

हुक्म सेक फरीद कमरिया, निखि अधिरिया आग पानी पधरिया मेरा कारज सिद्ध करो नजर टोना टोटका, व्यापार बन्द, बिक्री बन्द होवे तो दूर करो, जिसने किया कराया उस पर पड़ो, मेरा व्यापार बन्द बिक्री बढ़ाओ धन-धान्य पूर्ण करो, जसमति हाथी बैठ पधारो, दुहाई गुरु गोरखनाथ की शक्ति, फुरो मन्त्र ईश्वरो वाचा ॥

जब दस मालाएं पूरी हो जांय, तो उस लाल कपड़े में वह शंख चावलों सहित बांध लें और दूसरे दिन प्रातःकाल ही अपनी दूकान पर ले जाकर इसको ऐसे स्थान पर रख दें, जहां आने जाने वाले ग्राहक की नजर पड़ती रहे।

यह मन्त्र अत्यन्त महत्वपूर्ण है, और एक उच्चकोटि के साबर मन्त्रसिद्ध योगी से यह प्रयोग प्राप्त हुआ था, उनके अनुसार इस प्रयोग से उन्होंने लाखों व्यापारियों का भला किया है, यदि दुकान पर या दुकान की बिक्री पर शत्रु अथवा विरोधी ने कोई प्रयोग कराया हुआ हो तो भी वह समाप्त हो जाता है तथा आश्चर्यजनक रूप से उसकी बिक्री बढ़ जाती है, इसे साबर मन्त्रों में शिरोमणि कहा जाता है।

५-दरिद्रता निवारण प्रयोग

दीपावली के तीन दिन पूर्व रात्रि को यह प्रयोग संपन्न किया जाता है, काले कपड़े में एक मुट्ठी तिल, सात काली मिरच के दाने और **तीन त्रिलोह पवित्री** बांध कर रात्रि को अपने सामने रख कर तेल का दीपक लगावें और निम्न मन्त्र की १० मालाएं फेरें—

मन्त्र

ॐ नमो काली कंकाली भैरव हुक्मे हाजिर रहे मेरा कारज तुरन्त करे, घर की गरीबी दरिद्रता बांधे मुंख बांधे, शरीर बांधे, कोटा बांधे उसका, अंग अंग बांधे, उठा के गिरे, गिराकर उठावे, घर से दूर भगावे, चोट पर चोट करे, मेरा कारज सिद्ध करे, कालिके पुत्र कंकाल भैरव फुरो मन्त्र ईश्वरो वाचा ॥

इस मन्त्र की दस मालाएं जब पूरी हो जांय, तो मिट्टी की हंडिया में यह पोटली रख कर रात्रि को सड़क के बीच में ले जाकर रख दें और साथ में पानी एक लोटा भर कर ले जावें, और उस हंडिया के चारों ओर पानी का घेरा बना दें, फिर लोटा को लेकर अपने घर आ जावें, तथा हंडिया वहीं रहने दें, वापिस आते समय पीछे मुड़ कर न देखें।

इस प्रकार करने से दरिद्रता का नाश हो जाता है। *

दीपावली का पर्व

मात्र रोशनियों की जगमगाहट ही नहीं है

बल्कि

सहस्त्ररूपा सिद्ध महालक्ष्मी को हमेशा-हमेशा
के लिए अपने घर में स्थापित करना है
एक विशेष साधना पद्धति के द्वारा

और यदि यह साधना पद्धति पूज्य गुरुदेव के हाथों
सम्पन्न होकर सम्बन्धित यन्त्र या सामग्री
उपहार में हमें प्राप्त हो, तो फिर
कहना ही क्या ?

पर इस बार ऐसा संभव है

सैकड़ों हजारों पत्रों और गृहस्थ शिष्यों ने व्यक्तिगत रूप से गुरुदेव से मिल कर यह आग्रह किया, कि इस बार विशेष मुहूर्तों से सम्पन्न-चित्रा नक्षत्र युक्त रविवारी अमावस्या सिद्ध दीपावली पर्व —दीपावली की रात्रि को आप द्वारा सम्पन्न एवं सिद्ध कोई ऐसा यन्त्र या सामग्री प्राप्त होनी चाहिए जो कि हमारी दरिद्रता दूर करे, आर्थिक उन्नति दे सके, और पूर्ण सुखी सफल एवं सम्पन्न गृहस्थ जीवन बना सके।

पूज्य गुरुदेव ने इन सभी शिष्यों, साधकों के अनुरोध को स्वीकार करते हुए दीपावली पर विशिष्ट सामग्री—'पंच हकीक' सिद्ध कर (पंच हकीक सिद्धि— १-सहस्त्रलक्ष्मी सिद्धि, २-आकस्मिक धन प्राप्ति सिद्धि ३-पारिवारिक गृहस्थ सुख समृद्धि सिद्धि, ४-पारिवारिक रोग मुक्ति सिद्धि, और ५-मनोकामना सिद्धि) उन

सभी साधकों एवं शिष्यों को निःशुल्क भेजेंगे, जो आगे लिखे नियमों का पालन करते हुए नीचे दिये हुए पोस्ट कार्ड को साफ-साफ भर कर तुरन्त भेज देंगे—

नियम

१-दीपावली की रात्रि को गुरुदेव द्वारा सिद्ध यह सामग्री २७-१०-९२ तक यहां से रवाना कर देंगे (२५-१०-९२ को दीपावली है) जिससे यह दुर्लभ बहुमूल्य सामग्री आपको समय पर सुरक्षित रूप से मिल सके।

२-इस **पंच हकीक** को कार्तिक पूर्णिमा अर्थात् १०-११-९२ की रात्रि को पूजन कर अपने पूजा स्थान में स्थापित करना है, उस दिन दीपावली की तरह ही घर में रोशनी करें, दीये चारों ओर लगाएं तथा मिष्ठान्न आदि बना कर घर के सदस्य प्रसन्नता के साथ भोजन करते हुए आनन्दमय वातावरण बनाएं।

३-आप नीचे दिया हुआ प्रपत्र भर कर लिफाफे में डाल कर उसे चिपका दें तथा लिफाफे पर एक रुपये का टिकट लगा कर पता लिखें—**मन्त्र-तन्त्र-यन्त्र विज्ञान, डॉ० श्रीमाली मार्ग, हाईकोर्ट कालोनी, जोधपुर-३४२००१ (राजस्थान)**। और इस लिफाफे को बिना समय गवाये आज ही डाक के डिब्बे में डाल दें जिससे समय पर हमें आपका यह प्रपत्र मिल जाय और आपको यह दुर्लभ उपहार भेजा जा सके।

४-इस सामग्री को हम १६२) रुपये (१५०/-रु० सन् ९३ का पत्रिका शुल्क तथा १२ रु० डाक व्यय) की वी०पी० से भेज देंगे, जिससे यह सामग्री सुरक्षित रूप से समय पर आपको प्राप्त हो सके। उपरोक्त धनराशि तो आपका सन् ९३ का पत्रिका शुल्क है, जिसकी रसीद तुरन्त आपको भेज देंगे और पूरे वर्ष भर नियमित रूप से पत्रिका भी निष्ठा के साथ।

५-इस प्रकार यह दुर्लभ उपहार तो **"इस वर्ष के श्रेष्ठतम उपहार"** के रूप में आपको निःशुल्क ही भेंट कर रहे हैं।

६-आप चाहें तो किसी अन्य को भी पत्रिका सदस्य बना कर यह उपहार प्राप्त कर सकते हैं, आप इस प्रपत्र में जिसे पत्रिका सदस्य बनाना है उसका नाम, पता लिखिये तथा साथ में पत्र लिख कर भेज दीजिये कि उपहार व रसीद आपको किस नाम व पते से भेजें।

७-आप नीचे दिया हुआ प्रपत्र सावधानी से भरिये और लिफाफे में डाल कर हमें भेज दीजिये आज ही......... अभी.........

प्रपत्र

पत्रिका सदस्यता संख्या........ ....

★ मैं सन् ९३ के लिए पत्रिका सदस्य बन रहा हूं, कृपया पूज्य गुरुदेव द्वारा दुर्लभ एवं अद्वितीय उपहार मुझे निम्न पते पर भेजें—

मेरा पूरा नाम ....

मेरा पूरा पता ....

....

उपहार पैकेट आने पर मैं उसे छुड़ाने का वायदा करता हूं।

★★ कृपया निम्न नाम व पते वाले को पत्रिका सदस्य बना दीजिये—

नाम ....

पूरा पता ....

....

और सम्बन्धित उपहार व पत्रिका सदस्यता की रसीद निम्न पते पर मुझे भेज दीजिये—

मेरी पत्रिका सदस्यता संख्या.......................

मेरा पूरा नाम ....

मेरा पूरा पता ....

....

हस्ताक्षर

शनि दोष निवारण

नवग्रहों में शनि दोष सर्वाधिक पीड़ाप्रद कष्ट कारक एवं बाधाएं देने वाला होता है। शनि की साढ़ेसाती आने पर तो अन्य ग्रहों का शुभ प्रभाव भी क्षीण हो जाता है, अतः समय पर शनि दोष का निवारण अवश्य करना चाहिए।

इस सम्बन्ध में एक अत्यन्त प्राचीन शनि स्तोत्र प्राप्त हुआ है, **'शनि महायन्त्र'** अथवा **'शनि मुद्रिका'** धारण कर शनि शान्ति हेतु शनिदेव और उनकी पत्नी दोनों के स्तोत्र का पाठ अवश्य करना चाहिए।

श्री शनि स्तोत्र

कोणस्थः पिंगलो बभ्रुः कृष्णो रौद्रान्तको यमः,
सौरिः शनिश्चरो मन्दः पिप्पलादेन संस्तुतः।
एतानि दश नामानि प्रातरुत्थाय यः पठेत्,
शनिश्चर-कृत पीडा न कदाचिद् भविष्यति॥

कोणस्थ, पिंगल, बभ्रु, कृष्ण, रौद्र, अन्तक, यम, सौरि, शनिश्चर, मन्द—इन नामों द्वारा पिप्पलाद मुनि ने स्तुति की है, जो व्यक्ति प्रातःकाल उठ कर इन दस नामों को पढ़ता है उसे शनि की पीड़ा कभी नहीं होती।

श्री शनि भार्या स्तोत्र

ध्वजिनी धामिनी चैव कंकाली कलह-प्रिया,
कलही कंटकी चापि अजा महिषी तुरगमा।
नामानि शनि भार्यायाः नित्यं जपति यः पुमान्,
तस्य दुःखानि नश्यन्ति सुखं सौभाग्यमेधते॥

ध्वजिनी, धामिनी, कंकाली, कलह-प्रिया, कलही, कंटकी, अजा, महिषी, तुरंगमा। जो मनुष्य शनि-पत्नी के इन नामों को नित्य जपता है, उसके सब दुःख नष्ट होकर सुख-सौभाग्य की वृद्धि होती है। ●

(पृष्ठ संख्या १६ का शेष भाग)

पंचम क्रम

ॐ ह्रीं इन्द्राय नमः। ॐ ह्रीं अग्नये नमः।
ॐ ह्रीं वरुणाय नमः। ॐ ह्रीं वायवे नमः।
ॐ ह्रीं यमाय नमः। ॐ ह्रीं निर्ऋतये नमः।
ॐ ह्रीं कुबेराय नमः। ॐ ह्रीं ईशानाय नमः।
ॐ ह्रीं ब्रह्मणे नमः। ॐ ह्रीं अनन्ताय नमः।

षष्टम क्रम

ॐ ह्रीं वज्राय नमः। ॐ ह्रीं शक्तये नमः।
ॐ ह्रीं दण्डाय नमः। ॐ ह्रीं खड्गाय नमः।
ॐ ह्रीं पाशाय नमः। ॐ ह्रीं ध्वजायै नमः।
ॐ ह्रीं गदायै नमः। ॐ ह्रीं त्रिशूलाय नमः।
ॐ ह्रीं पद्मायै नमः। ॐ ह्रीं चक्राय नमः।

इस प्रकार देवी दुर्गा के आगे एक महा दीपक मिला कर कुल ५१-५१ दीपक शक्ति चक्र तथा हकीक पत्थर आवश्यक हैं। जब यह अनुष्ठान पूर्ण हो जाये तो दुर्गा को पुष्पांजलि अर्पित करते हुए दीपक के आगे पुष्प अर्पित करें तथा निम्न दुर्गा मन्त्र का नौ बार पाठ करें—

शक्ति सिद्धि प्रद दुर्गा मन्त्र

सृष्टिस्थितिविनाशानां शक्तिभूते सनातनि।
गुणाश्रये गुणमये नारायणि नमोऽस्तुते॥

अब साधक उसी स्थान पर बैठ कर एक माला नवार्ण मन्त्र का जप करें, तत्पश्चात् गुरु आरती तथा दुर्गा आरती सम्पन्न करें।

नवार्ण मन्त्र

॥ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे॥

शक्ति साधना का यह विजय प्रयोग ऐसा विशिष्ट प्रयोग है, जिससे नवरात्रि में की गई साधनाओं में पूर्णता तो प्राप्त होती है और साधक अपने कार्यों में सदैव विजयी रहता है। साधक पूरी रात दीपकों को उसी प्रकार जलते रहने दें तथा प्रातः उठ कर अपना नित्य का पूजन सम्पन्न कर इन दीपकों को आगे दीपावली में प्रयोग हेतु रख लें। ●

सामग्री, जो आपकी साधनाओं में सहायक हैं

साधना प्रयोग	पृष्ठ संख्या	सामग्री नाम	न्यौछावर
शक्ति दुर्गा प्रयोग	८	सर्व बाधा मुक्ति यन्त्र	१०५)रु०
		श्रीवनदुर्गा शक्ति फल	६०)रु०
विजय सिद्धि पर्व	६	आठ उच्छिष्ट चाण्डालिनी चक्र	१२०)रु०
		तन्त्र विजय यन्त्र	१५०)रु०
		तांत्रोक्त बिल्ली की नाल	८०)रु०
गायत्री साधना	१३	गायत्री यन्त्र चित्र	१५०)रु०
दीपावली महापूजन विधान	१७	दीपावली महालक्ष्मी साधना पैकेट	३६०)रु०
तांत्रोक्त कमला साधना	२१	कमला यन्त्र	१८०)रु०
		लक्ष्मी पद्म शंख	१२०)रु०
		कमला माला	८०)रु०
लक्ष्मी वशीकरण साधना—	२५	—	—
१-गोरखनाथ कृत लक्ष्मी कीलन प्रयोग	२६	सियारसिंगी	८०)रु०
२-मत्स्येन्द्रनाथ ,, आबद्ध ,,	२७	लक्ष्मी युक्त गणेश विग्रह	६०)रु०
३-रावणकृत लक्ष्मी कीलन प्रयोग	,,	नौ लक्ष्मी वरवरद	६६)रु०
		कमलगट्टा माला	८०)रु०
आज्ञा सिद्धि का शास्ता प्रयोग	३१	अर्द्धनारीश्वर यन्त्र	७०)रु०
		महाशास्ता कुण्डल	७०)रु०
लक्ष्मी साधना—	३३	—	—
१-धनदा प्रयोग	३४	गोमती चक्र	४५)रु०
२-महालक्ष्मी प्रयोग	,,	एकाक्षी नारियल	२४०)रु०
३-आकस्मिक धन प्राप्ति प्रयोग	३५	सियारसिंगी	८०)रु०
४-व्यापार वृद्धि प्रयोग	३६	दक्षिणावर्ती शंख	६००)रु०
५-दरिद्रता निवारण प्रयोग	,,	तीन त्रिलोह पवित्री	१०५)रु०
शनि दोष निवारण	४०	शनि महायन्त्र	१५०)रु०
		(अथवा) शनि मुद्रिका	६०)रु०

रजि० नं० : ३५३०५/८१ पोस्टल एम०आर०जे० : ३६६७/८३-८४

फोन काल

आपकी सुविधा के लिए

जल्दी से जल्दी साधना सामग्री मंगाने हेतु—फोन-डाक-सेवा

कई बार पत्रिका विलम्ब से मिलने या समय पर आप द्वारा पत्र न भेजे जाने के कारण जिस दिन जो साधना करनी होती है, सामग्री समय पर न मिलने से आप उस दिन की साधना से वंचित हो जाते हैं और आप का मन कुन्द सा हो जाता है।

'मन्त्र-तन्त्र-यन्त्र विज्ञान' पत्रिका ने आपके लिए सुविधा प्रदान की है—फोन डाक सेवा, सामग्री मंगाने के लिए आपको अग्रिम धनराशि भेजने की जरूरत नहीं है, हमें आप पर विश्वास है।

आजकल जगह-जगह—एस०टी०डी० बूथ खुल गये हैं जिस वजह से बहुत थोड़े से पैसों में किसी भी अन्य शहर में तुरन्त बात हो जाती है।

हमने व्यवस्था की है, कि प्रतिदिन प्रातः ८ बजे से १० बजे तक यहां जोधपुर में टेलीफोन पर एक गुरु भाई उपस्थित रहेगा, आप टेलीफोन उठाइये—०२९१—३२२०९ डायल कीजिये, (०२९१ जोधपुर का कोड नंबर तथा ३२२०९ 'मन्त्र-तन्त्र-यन्त्र विज्ञान' कार्यालय के टेलीफोन हैं) और आप जो साधना सामग्री चाहते हैं, उसे लिखा दीजिये, हम उसी दिन आपकी साधना सामग्री डाक से आपको रवाना कर देंगे। आप हमें टेलीफोन पर निम्न सूचना दें—१-आपका नाम, २-आपकी पत्रिका सदस्यता संख्या, ३-आपका पूरा पता (यदि पत्रिका सदस्यता संख्या ज्ञात हो तो पता बताने की आवश्यकता नहीं है), ४-साधना सामग्री, जो आप चाहते हैं, ५-पत्रिका के किस अंक में किस पृष्ठ पर यह साधना सामग्री प्रकाशित है।

बस फोन कीजिये और तीसरे-चौथे रोज साधना सामग्री वी०पी० के द्वारा आपके हाथों में पहुंच जायेगी, जिससे आप समय पर साधना सम्पन्न कर सकेंगे।

यह एक शानदार आइडिया है, आपके लिए, आपकी सुविधा के लिए। ★

पुस्तक प्रकाशन

गुरुदेव स्वामी निखिलेश्वरानन्द जी
विस्तृत परिचय

ऑफसेट प्रिन्टिंग से प्रकाशित—एक शानदार पुस्तक, आपके लिए, आपके गुरुदेव के बारे में

न्यौछावर—१०)रु०